ॐ श्री गणेशाय नमः

भविष्य निर्णय

द्विमासिक पत्रिका

(स्वास्थ्य, ज्योतिष, वास्तु, अध्यात्म, तंत्र-मंत्र चिंतन एवं बाल कहानी की द्विमासिक काल दर्शक)

वर्ष : 3 अंक : 6 अगस्त-सितम्बर 2013 मूल्य 15/-

संरक्षक
डा. चन्दन लाल पाराशर
डा. अशोक चतुर्वेदी
श्री महेश दत्त भारद्वाज
श्रीमती बिमला शर्मा

प्रधान सम्पादक
डा. महेश पारासर
फोन- 2525262, 2856666

सह-सम्पादक
डा.(श्रीमती) शोनू मेहरोत्रा
डा.(श्रीमती) रचना भारद्वाज
श्रीमती आयुषी पाराशर

वितरण प्रबन्धक
पवन मेहरोत्रा
डा. सतीश शर्मा

परामर्शदाता
डा. खेमचन्द्र शर्मा
डा. सतीश शर्मा
श्री महेश वर्मा
श्री जी. पी. एस. राघव

वित्त सलाहकार
श्री सतीश चन्द्र बंसल

आवरण सज्जा
ए. डी. ऑफसेट
आगरा फोन-9319053439

सदस्यता शुल्क
150/ दो वर्ष

ज्योतिः शास्त्रमनन्ताभ- स्कन्धत्रय समन्विवम् । सर्वलोकहितार्थाय, मुनिभिर्निर्मितं पुरा ।।
नमस्ते वास्तु देवाय, भू-शय्या शायिने प्रभो । कल्याणं कुरु मे नित्यं- सर्वथा सर्वदा विभो ।।
आचार्य चन्दन लाल पाराशर

क्या कहाँ

सर्वप्रथम गणेश का ही पूजन क्यों?	डा. महेश पारासर	2
विभिन्ना शिवलिंग के अभिषेक से उपचार	डा. रचना के भारद्वाज	4
लक्ष्य भेदने वाले होते हैं धनु लग्न वाले	डा. शोनू मेहरोत्रा	5
क्या दान देने से भी परेशानियाँ बढ़ती हैं?	श्रीमती कविता अगरवाल	6
रक्षाबन्धन	प. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी	7
फेंग शुई द्वारा सुखी जीवन का रहस्य	श्री पवन कुमार मेहरोत्रा	8
श्रावण मास का कौनसा सोमवार कितना उपयोगी	पं. अजय दत्ता	9
ज्योतिषीय द्रष्टिकोण में क्या होती हैं पिता (सूर्यदेव) की भूमिका?	पं. दयानन्द शास्त्री	10
वृद्धावस्था में रहें–अपेक्षाओं से परे	श्री सुरेश अग्रवाल	11
वास्तु में दक्षिण दिशा का महत्व	श्रीमती रेखा जैन	12
मासिक राशिफल	पुष्पित पारासर	13–14
एक्स्ट्रा मैरिज अफेयर यानी ग्रहों का खेल	मोनिका गुप्ता	15
सफेद आक–सौभाग्य व समृद्धि बधर्क	पं. दिलीप उपाध्याय	15
बेकार की सोच	विजय शर्मा	16
पूजा – सामिग्री		20

इस पत्रिका का कोई भी अंश या भाग किसी भी रूप में प्रकाशक की अनुमति के बिना, किसी अन्य के द्वारा उपयोग किया जाना वर्जित है। लेखकों के विचारों से सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है। अतः लेखों के सम्बन्ध में उत्पन्न किसी भी प्रकार का विवाद हेतु पत्रिका परिवार उत्तरदायी नहीं होगा। इसके लिए मूल लेखक ही जिम्मेदार होगें। सम्पादक किसी भी लेख को बिना कारण सम्पादित/निरस्त किये जाने का अधिकार सुरक्षित रखते हैं। अप्रार्थित पांडुलिपियों की वापसी नहीं होगी। कॉपीराईट अधिकार भविष्य निर्णय में निहित रहेगा। हमारा न्यायालय क्षेत्राधिकार आगरा होगा।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक व सम्पादक डा. महेश पारासर द्वारा Aydee Offset 42/140 एम, कृष्णा कुंज, हलवाई की बगीची, आगरा– से छपवाकर FF-6, भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह टाकीज के सामने, एम. जी. रोड़, आगरा से प्रकाशित। **RNI No. UPHIN/2010/44791**

''प्रधान संपादक की कलम से''

डा. महेश पारासर
ज्योतिष महामहोपाध्याय, वास्तुशास्त्राचार्य,
ज्योतिष भूषण, ज्योतिष अलंकार,
ज्योतिष भास्कर, वराहमिहिर पद से सम्मानित
प्रबन्धक, ज्योतिष तंत्र शिक्षा प्रसार समिति

सर्वप्रथम गणेश का ही पूजन क्यों?

भारतीय देव परम्परा में गणेश आदिदेव हैं। हिदूंधर्म में किसी भी शुभकार्य का आरंभ करने के पूर्व गणेश जी की पूजा करना आवश्यक माना गया है, क्योंकि उन्हें विघ्नहर्ता व ऋद्धि–सिद्धि का स्वामी कहा ाजाता है। इनके स्मरण, ध्यान, जप आराधना से कामनाओं की पूर्ति होती है व विघ्नों का विनाश होता है। वे एकदंत, विकट, लम्बोदर और विनायक है। वे शीघ्र प्रसन्न होने वाले बुद्धि के अधिष्ठाता और साक्षात् प्रणवरुप हैं। गणेश का अर्थ है–गणों का ईश। अर्थात् गणों का स्वमी। किसी पूजा, आराधना, अनुष्ठान व कार्य में गणेश जी के गण कोई बाधा न पहुँचाएं, इसलिए सर्वप्रथम गणेश पूजा करके उसकी कृपा प्राप्त की जाती है। प्रत्येक शुभकार्य के पूर्व श्रीगणेशाय नमः का उच्चारण कर उनकी स्तुति में यह मंत्र बोला जाता है–

वक्रतुण्ड महाकाय सूर्यकोटि समप्रभः। निर्विघ्नं कुरु में देव सर्वकार्येषु सर्वदा।।

अर्थात् 'विशाल आकार और टेढ़ी सूंड वाले करोड़ों सूर्यो के समान तेज वाले हो देव (गणेशजी)! मेरे समस्त कार्यो को सदा। विघ्नरहित पूर्ण (सम्पन्न) करें!'

वेदों में भी गणेश की महत्ताव उनके विघ्नहर्ता स्वरुप की ब्रह्ममरुप में स्तुति व आवाहन करते हुए कहा गया है–

गणनां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कबीना मुपश्रवस्तमम्। ज्येष्ठरांज ब्रह्ममणस्पत आ नः श्रृण्वन्नृतिभिःसीदसादनम्।।

ऋग्वेद 02/23/01

गणेश जन आस्थाओं में अमूर्त रुप से जीवित थे, वह आस्थाओं से मूर्तियों में ढल गए। गजमुख, एकदंत, लम्बोदर आदि नामों और आदिम समाजों के कुल लक्षणों से गणेश को जोड़कर जहां गुप्तों ने अपने सम्राज्य के विस्तार का मार्ग प्रशस्त किया वहीं पूजकों को भी अपनी सीमा विस्तृत करने का अवसर मिला। गणेश सभी वर्गो की आस्थाओं का केंद्र बन गए। एक प्रकार से देखा जाए तो जहां गणेश व्यापक समाज और समुदाय को एकता के सूत्र में पिरोने का आधार बने, वहीं सभी धर्मो की आस्था का केन्द्र बिंदू भी सिद्ध हुए। उनका मंगलकारी व विघ्नहर्ता रुप सभी वर्गो को भाया। इस विराट विस्तार ने ही गणेश को न केवल सम्पूर्ण भारत बल्कि विदेशों तक पूज्य बना दिया और अब तो विश्व का सम्भवतः ही ऐसा कोई कोना हो जहां गणेश न हों।

वेदों और पुराणों में सर्वत्र प्रथम पूजनीय गणपति बुद्धि, साहस और शक्ति के देवता के रुप में भी देखे जाते हैं। सिंदूर वीरों का अलंकरण माना जाता हैं गणेश, हनुमान और भैरव को इसलिए सिंदूर चढ़ाया जाता है। गणपत्य संप्रदाय के एकमात्र आराध्य के रुप में देश में गणेश की उपासना सदियों से प्रचलित है।

आज भी गणपति मंत्र उत्तर से दक्षिण तक सभी मांगलिक कार्यो में बोले जाते हैं। नगर–नगर में गणेश मंदिर हैं जिनमें सिंदूर, मोदक, दूर्वा और गन्ने चढ़ाए जाते हैं। सिंदूर शौर्य के देवता के रुप में, मोदक तृप्ति और समृद्धि के देवता के रुप में तथा दूवा और गन्ना हाथी के शरीर वाले देवता के रुप में गणेश को प्रिय माना जाता है।

हनुमान की को सिंदूर चढ़ाने की परंपरा क्यों?

श्री रामाचन्द्र का राज्य अभिषेक होने के पश्चात् एक मंगलवार की सुब जब हनुमानजी को भूख लगी, तो वे माता जानकी के पास कुछ कलेवा पाने के लिए पहुंचे। सीतामाता की मांग में लगा सिंदूर देखकर हनुमान जी ने उनसे आश्चर्यपूर्वक पूछा–"माता! मांग में आपने यह कौन सा लाल द्रव्य लगाया है?"

इस पर सीता माता ने प्रसन्नतापूर्वक कहा–"पुत्र! यह सुहागिन स्त्रियों का प्रतीक, मंगलसूचक सौभाग्यवर्धक सिंदूर है, जो स्वामी के दीर्घायु के लिए जीवनपर्यंत मांग में लगाया जाता है। इससे वे मुझ पर प्रसन्न रहते हैं।

हनुमान जी ने यह जानकर विचार किया कि जब अंगुली भर सिंदूर लगाने से स्वामी की आयु में वृद्धि होती है, तो फिर क्यों न सारे शरीर पर इसे लगाकर स्वामी भगवान् श्रीराम को अजर अमर कर दूं। उन्होंने जैसा सोचा, वैसा ही कर दिखाया। अपने शरीर पर सिंदूर पोतकर भगवान् श्री राम की सभा में पहुंच गए। उन्हें इस प्रकार सिंदूरी रंग में रंगा देखकर सभा में उपस्थित सभी लोगं हंसे,

यहां तक कि भगवान् राम भी उन्हें देखकर मुस्काराए और बहुत प्रसन्न हुए। उनके सरल भाव पर मुग्ध होकर उन्होंने यह घोषण की कि जो मंगलवार के दिन मेरे अनन्य प्रिय हनुमान को तेल और सिंदूर चढ़ाएंगे, उन्हें मेरी प्रसन्नता प्राप्त होगी और उनकी समस्त मनोकामनाएं पूर्ण होगी। इस पर माता जानकी के वचनों में हनुमान जी को और भी अधिक दृढ़ विश्वास हो गया।

कहा जाता है कि उसी समय से भगवान् श्री राम के प्रति हनुमान जी की अनुपम स्वामिभक्ति को याद करने के लिए उनके सारे शरीर पर चमेली के तेल में सिंदूर घोलकर लगाया जाता है। इसे चोला चढ़ाना भी कहते हैं।

महेश पारासर

अमृत वचन

आदमी जितना छोटा होता है उसका अंहकार उतना ही बड़ा होता है।

मनुष्य का मन जितना स्थूल होगा, उसे जगत् ही सत्य लगेगा। उसका भोगों में ही आकर्षण होगा। सूक्ष्म मन ही दिव्य चेतना का अनुभव करता है।

पाठकों के पत्र

आदरणीय सम्मादक महोदय,

भविष्य निर्णय का मैं नियमित पाठक हूँ। पत्रिका का स्तर दिन पर दिन अच्छा होता जा रहा है। पत्रिका के अन्दर छपे लेख काफी स्वरीच थे जिनसे बहुत जानकारी प्राप्त हुई।

सधन्यवाद

श्री कैलाश चन्द्र, दिल्ली

परम पूज्य पारासर जी,

भविष्य निर्णय द्विमासिक पत्रिका मुझे समय से प्राप्त होती है। पारासर जी यदि सम्भव हो तो आप अपनी पत्रिका को मासिक कर दें। दर असल ज्योतिष विषय ही ऐसा है कि जिस पर जितना ज्यादा शोध किया जाये उतना ही कम है। मासिक पत्रिका होने के बाद हमें अधिक जानकारी प्राप्त होती।

दिवाकर श्रीवास्तव, ग्वालियर

आपके प्रश्नों के समाधान

प्रश्न. मेरा विवाह कब होगा? उपाय बतायें?

राधिका बंसल, मथुरा

उत्तर– आपका विवाह जून 2014 के बाद होगा। आपको सवा छः रत्ती का मोती तथा सवा आठ रत्ती का लाजवर्त धारण करना चाहिए। रोजाना शनिस्त्रोत का तीन बार पाठ करें।

प्रश्न– मेरा राजनैतिक कैरियर कैसा रहेगा। बताये?

शिशुपाल सिंह, अलीगढ़

उत्तर– अगस्त 2015 के बाद आपको राजनीति में अच्छी सफता मिलेगी। आप हनुमान जी की पूजा करें तथा सवा छः रत्ती का गोमेद धारण करें। पक्षियों को दाना चुगायें।

डा.महेश पारासर

आपकी वास्तु समस्या का समाधान

समस्या– घर में अशान्ति और व्यापार में लगातार घाटा हो रहा है। कृपया उचित समाधान बतायें?

रवि गौतम, शमसाबाद

समाधान– आपके घर में उत्तर में रसोई का होना प्रमुख वास्तु दोष है। आप रसोई को पूर्व–दक्षिण में स्थान्तरित करें। इससे आपकी सभी समस्याओं का समाधान हो जायेगा।

समस्या– हमारे ऊपर काफी मुकदमें चल रहे है। क्या इसका कारण वास्तु दोष है? समाधान बतायें?

प्रभात सिंह, आगरा

समाधान– घर के दक्षिण पूर्व में या आग्नेय कोण में जब भी पानी की बोरिंग होगी। मुकदमें बाजी, आगजनी व चौरी का सदा भय बना रहेगा। तथा घर की महिलाओं व बड़े पुत्र के लिए भी अच्छा नहीं होता है। बोंरिंग को दक्षिण पूर्व से हटाकर उत्तर दिशा में परिवर्तित करवा दें। आराम मिलेगा।

पं. अजय दत्ता
मो. 9319221203

विभिन्न शिवलिंग के अभिषेक से उपचार

डा. रचना के भारद्वाज
वास्तु शास्त्राचार्य, ज्योतिष प्रभाकर, अंक विशारद
नई दिल्ली

जन्म कुंडली के ग्रह यदि अपनी दशाओं, अंतर्दशाओं या जन्मकाली व गोचर वशात परेशान कर रहे हैं, तो ग्रहों के आधार पर शिवलिंग पर अभिषेक कर उनका उपचार करें, साथ ही जाने किस राशि के व्यक्ति किस प्रकार शिव आराधना करे।

सूर्य:- यदि आप सूर्य से संबंधित कष्ट या रोग जैसे ज्वर, सिरदर्द, रक्तचाप एवं रकत संचार में अनियमतिता, हृदय रोग, स्वभाव में चिड़चिड़ापन आदि से परेशान है, तो आप शिवलिंग पूजन, आक पुष्पों, पत्तों और बिल्व पत्रों से करें।

चंद्रमा:- यदि आप चंद्रमा से संबंधित कष्ट या रोग जैसे मानसिक रोग मतिभ्रम, रक्त की कमी, खांसी, जुकाम, नजला, अधीरता, अवसाद आदि से परेशान हैं, तो शिवलिंग पर शिव रुद्राष्टक (रुद्री पाठ) तिल मिश्रित दूध की धार से करें।

मंगल:- यदि आप मंगल से संबंधित कष्ट या बीमारी जैसे मांसपेशियों में पीड़ा, एलर्जी, नाक से खून बहना, फोड़े, उच्च रक्तचाप आदि से परेशान हैं, तो शिवजी का गिलोय जड़ी–बूटी से रस से अभिषेक करें।

बुध:- यदि बुध से संबंधित कष्ट या बीमारी जैसे बुद्धि विकार, स्मरण शक्ति की दुर्बलता, चर्मरोग, गुर्दे आदि से परेशान है, तो आप विदारा जड़ी–बूटी के रस से शिवजी का अभिषेक करें।

गुरु:- यदि आप ग्रह से संबंधित कष्ट या रोग से (चर्बी, आंते, लीवर) परेशान है, तो आप शिवलिंग पर हल्दी मिश्रित दूध चढ़ाएं।

शुक्र:- यदि आप शुक्र ग्रह से संबंधित कष्ट या बीमारी जैसे वीर्य, मलमूत्र, शारीरिक शक्ति में कमी, मधुमेह, यौन, रोग, आंखों से पानी बहना, नपुंसकता आदि से परेशान है, तो आप पंचामृत, शहद, घी से शिवलिंग का अभिषेक करें।

शनि:- यदि आप ग्रह से संबंधित बीमार जैसे मांसपेशियों का दर्द, जोड़ों का दर्द, वायु रोग, चिंता, अवसाद आदि से परेशान है, तो गन्ने के रस और छाछसे शिव का अभिषेक करें।

राहु-केतु:– यदि आप राहु–केतु से संबंधित रोग जैसे सिर चकराना, मानसिक, परेशानी, पिंडलियों में दर्द, बवासीर, फोड़े, फुंसी, उदर पीड़ा, निम्न रक्तचाप से परेशान हे, तो भांग–धतूरे से शिवलिंग का अभिषेक करें।

हर राशि वाले किस प्रकार से शिव जी पूजा उपासना कर सकते है। आइये जानते हैं।

मेष:-गुड़ के जल से अभिषेक करें। मीठी रोटी का नैवेद्य, लाल चंदन और कनेर के फूल चढ़ाएं।

वृष:- दही का अभिषेक करे। शक्कर, चावल श्वेत चंदन और सफेद फूल चढ़ाएं।

मिथुन:- गन्ने के रस से शिव का अभिषेक करे। मूंग, दूब और कुशा चढ़ाएं।

कर्क:-घी से अभिषेक करे। चावल, कच्चा दूध, श्वेत आर्क और शंख पुष्पी अर्पित करें

सिंह:- गुड़ के जल से अभिषेक करें। गुड़ और चावल से बनी खीर का नैवेद्य, गेहूं का चूरमा और मदार के फूल अर्पित करें।

कन्या:- गन्ने के रस से अभिषेक करें। भांग, दूब, मूंग और पान अर्पण करें।

तुला:- सुगंधित तेल या इत्र से अभिषेक करें। दही, शहद, श्रीखंड का नैवेद्य और श्वेत फूल चढ़ाएं।

वृश्चिक:- पंचामृत से अभिषेक करें। गोझिया का लाल पुष्प चढ़ाएं।

धनु:- हल्दी दूध से अभिषेक करें। केसर, बेसन से बने मिष्ठान और गेंदे के फूल चढ़ाएं।

मकर:- नारियल पानी से अभिषेक करें। उड़द से बने मिष्ठान और नीलकमल के फूल अर्पित करें।

कुंभ:- तिल के तेल से अभिषेक करें। उड़द से बनें मिष्ठान और शमी के फूल चढ़ाएं।

मीन:- केसरयुक्त दूध से अभिषेक करें। दही–भात का नैवेद्य, पीली सरसों और नाग केसर अर्पित करें।

सभी राशियों के लिये:- शिवलिंग का पंचामृत से अभिषेक करके, श्वेत अर्क के फूल चढ़ाकर तथा शिवलिंग पर चंदन से प्रणव (ऊँ) बनाकर भी उपासना की जा सकती है। यह उपासना सभी राशि वाले कर सकते है। ❋❋❋

Consult any problems: Health, Wealth, Marriage, Business, Education, Family Relations, Jobs,Enemies & Property
Remedies by Stones, Yantra, Mantra & Pooja
Horoscope, Match Making & Varshphal
Mon to Thu12 PM to 6 PM
भविष्य दर्शन®
Dr. Rachna K Bhardwaj
Consultant of Astrology & Vastu
East of Kailash, New Delhi - Ph. 09717195756
H.O.- Dr. Mahesh Parasar, Opp. Shah Cinema, Agra Ph. 0-0562-2525262,2856666 ❋❋❋

लक्ष्य भेदने वाले होते हैं धनु लग्न वाले

डा. शोनू मेहरोत्रा
वास्तुमहर्षि, ज्योतिषप्रभाकर,
वास्तु प्रवक्ता ;अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान

धनु लग्न काल पुरुष की कुड़ली में भाग्य भाव में पड़ता है। इस लग्न को भाग्यशाली लग्न कहा जाता है यह राशि मूल नक्षत्र के चार चरण, पूर्वाषाढ़ा के चार चरण व उत्तराषाढ़ा के एक चरण से मिलकर बनती है। धनु द्विस्वभाव लग्न है। धनु वालों का लग्नेश वृहस्पति होता है। धनु की आकृति धनुषणा से लक्ष्य साहे हुए एक पुरुष की है, जिसका ऊपर का हिस्सा तो पुरुष का और पीछे का हिस्सा घोड़े का है, धनु वाले भाग्य शाली होते है इन्हें वस अपना लक्ष्य निर्धारित करना होता है इस लग्न वाले जातक निष्ठुर स्वभाव के होते है।

यदि धनु लग्न पंद्रह अंश से कम है तो इसमें पुरुषत्व के गुण अधिक और यदि चंद्रह डिग्री से ज्यादा है तो पशुत्व के गुण अधिक होते हैं। इस लग्न का स्वामी बृहस्पति होता है। धनु पूर्व दिशा का स्वामी है और स्वभावत क्रूर है। और अग्नित्व की पुरुष राशि है। यह पृष्ठोदय राशि है तथा अंगों में पैरो की संधि व जांघो का स्वामित्व इसे प्राप्त है धनु लग्न के लोग भले और सज्जन होते है ये दौड़ने में माहिर होते हैं।इस लग्न में जन्म लेने वाला जतक दार्शनिक प्रकृति का होता है। मानवीय तथा धार्मिक विषयों में रुचि रखता है। अगर कुंडली में बृहस्पति तीसरे भाव में हो तो उदारता की कोई सीमा ही नहीं होती। घर में आए मेहमान की आवभगत में ये लोग तन–मन–धन से लग जाते है इस लग्न वाले को अन्याय पंसद नहीं होता। अन्याय देखकर ये लड़ने पर उवारु हो जाते है कभी–कभी ये कुछ बात भी बोल जाते हैं जिससे सामने वाले को कष्ट होता है। इस लग्न वाले अपने मित्रों को बहुत चाहते हैं तथा अपने विचार स्पष्ट रुप से व्यक्त करते हैं। न्याय पाने या दिलाने के लिए यदि अथक परिश्रम भी करना पड़े तो पीछे नहीं हटते हैं। इस लग्न के जातक बुद्धि से प्रखर तथा सात्विक विचारों वाले होते हैं। ये कोई भी बात बड़ी जल्दी समझ जाते हैं लेकिन किसी को समझाना हो तो एक बार के बाद चिडचिडा जाते हैं।

इस लग्न में जन्म लेने वाले जातक की गर्दन लम्बी होती है इनकी हंसी और मुस्कान लुभाबनी होती है ये अन्य लोगों द्वारा घिरा रहना तथा अपनी प्रशंसा पसन्द करते है। ये लोग बृहस्पति के गुणों से ओत प्रेत रहते हैं। इनकी दृष्टि में संपत्ति और आर्थिक उन्नति अधिक महत्व पूर्ण नहीं रहती। मंदिर बनवाने की इनकी प्रबल इच्छा होती है। इस लग्न के जातक की ज्ञान संबंधी विषयों धार्मिक कार्यो गह मनन और चिंतन की सात्विक आर्दशवादिता में विशेष अभिरुचि होती है।बिना किसी आंडबर के ये शांतीपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं। सेवा और किसी की सहायता करने से में इन्हें बड़ा संतोष मिलता है। व्यगंय और रहस्य विनोद में ये माहिर होते हैं। इस लग्न वाले जातक ख्याति प्राप्त करते हैं तथा अपने कुल के श्रेष्ठ पुरुष बनते हैं। उनके कार्यो और व्यवहार की हर जगह चर्चा रहती है। उन्हें उच्च अधिकारियों का सानिध्य प्राप्त होता हैं।कभी–कभी ये गुण विषय परिस्थितियों को भी जन्म देते है धनु लग्न का जातक कफ प्रधान प्रकृति का होता है। इन्हें स्नोफीलिया आदि बीमारियां होती है। साथ ही फेफड़े और छाती संबंधी बीमारियों होने की संभावनाए भी अधिक रहती है। ये रुढ़िवादी विचारों के होते हैं। विवाद मे ये आर्दश लोगों का ही साथ देते हैं। इस लग्न वाले व्यापार में भी रुचि लेते हैं। यदि इस लगन वाले पुरुष की पत्नी व्यापार में हाथ बटांए तो सफलता जल्दी मिलती है। ये खाने के भी खूब शौकीन होते हैं।

शेष पेज 15 **पर**.....

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. **10039621088**, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

क्या दान देने से भी परेशानियाँ बढ़ती हैं?

डा. कविता अग्रवाल

ज्योतिष ऋषि, वास्तुशास्त्राचार्य, अंक विशारद
प्रवक्ता – अखिल भारतीय–ज्योतिष संस्थान संघ
फ्रेंचाइजी – 'लाल किताब अमृत'
जी.डी. वशिष्ठ– 'बस अब दुख और नही'

सभी धर्मो में दान देने की प्रथा वर्षो से चली आ रही हैं ग्रह मनुष्य के जीवन पर शुभ–अशुभ प्रभाव डालते हैं ग्रहों को अनुकूल करने के लिये स्नान, पूजा, जाप और दान मुख्य उपाय हैं

दान देने से अशुभ भी हो सकता है यह बात केवल लाल किताब ने उजागार की है दान देने से उसका पुण्य मिलने की जगह नुकसान होता है। इसीलिये लाल किताब ने दान लेने और देने के बारे में नियम बताऐं है।

जातक की कुंडली में जो ग्रह अपने घर का और ऊच्च हो, उस ग्रह का दान जातक को नहीं करना चाहिये।

–यदि किसी जातक की जन्मकुडली में चन्द्र शुभ है। उसे दूध, चावल, चाँदी या मोती का दान कभी नहीं करना चाहिये।

–यदि किसी जातक की जन्मकुंडली में मंगल श्रेष्ठ है उसे मिठाई का दान नहीं करना चाहिये।

–श्रेष्ठ बुध वाले जातको को साबूत मूँग, हरा कपड़ा, कलम, फूल, मशरूम घड़ा आदि दान नहीं करना चाहिये।

–यदि किसी जातक का सूर्य उच्च हो तो गुड़, गेहूं का दान नहीं करना चाहिये।

–यदि बृहस्पति उच्च व शुभ हो जन्मकुडली में तो सोना, पीली वस्तु, पुस्तक का दान नहीं करना चाहिये।

–जिसका शुक्र ग्रह शुभ व उच्च हो तो सिले हुऐ कपड़े दान नहीं करने चाहिये।

–यदि शनि शुभ हो जन्मकुंडली में तो शराब, माँस तेल व लोहे का दान नहीं करना चाहिये।

इसीप्रकार उपरोक्त ग्रह अशुभ या नीच हो तो इन ग्रहों की वस्तुओं का दान या ये चीजें मुक्त में नही लेनी चाहिये।

दान से अनिष्ठ प्रभाव ग्रहों की विशेष स्थिति में–

चन्द्र छठे घर में हो तो ऐसा जातक यदि दूध या पानी कादान करें कुआँ, तालाब, नल, प्याऊ लगवाए या मरम्मत करवाऐ तो दिन ब–दिन उसका परिवार घटता रहें।

–शनि आँठवें घर में हो तो ऐसा जातक यात्री धर्मशाला, निवास, बनाए तो स्वयं बेघर और निर्धन हो जाता है।

–शनि पहले घर बृहस्पति पाँचवें घर में हो तो ऐसा जातक यदि भिखमंगे को ताँबे का पैसा या बर्तन दे तो उसकी संतान का नाश होता है।

–बृहस्पति दसँवें और चन्द्र चौथे घर में हो तो ऐसा जातक पूजास्थल मंदिर वनवाए तो झूठे आरोपों के तहत उसे फांसी लग जाती है।

–नाँवें घर में शुक्र वाला जातक अगर अनाथ बच्चे को गोद ले या उहें अपने पास रखें तो उसकी मिट्टी पलीद होती है।

–बारहँवें चन्द्रवाला जातक यदि धर्मशाला या साधु को रोजी–रोटी खिलाए या दूध पिलाए या बच्चों के लिये निःशुल्क शिक्षा का प्रबन्ध करे या स्कूल–पाठशाला खोले तो उसकी ऐसी दुर्गति होती है कि उसके अंत समय में पानी देने वाला नहीं होता।

–साँतवें बृहस्पति जातक यदि किसी को वस्त्र दान करे तो वह खुद निर्वस्त्र हो जाता है।

–सूर्य 7, 8 घर में हो तो ऐसा जातक सुबह–शाम दान करे तो वह दान जहर के बराबर असर करता है।

इसप्रकार दान देना व लेना भी मुश्किल में डाल सकता है इसलिये दान दे लेकिन अपनी जन्मकुंडली में ग्रहों की स्थिति को देखकर। ❋❋❋

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध कराये जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर, कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

रक्षाबन्धन

पं. ब्रजकिशोर शर्मा ब्रजवासी
भागवताचार्य

भविष्योत्तर पुराण के अनुसार रक्षाबन्धन का परमपवित्र त्यौहार श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को मनाया जाता है। इसमें पराह्नव्यापिनी तिथि ली जाती है। यदि यह दो दिन हो या दोनों ही दिन न हो तो पूर्वा लेनी चाहिए। यदि उस दिन भद्रा हो तो उसका त्याग करना चाहिए। भद्रा में श्रावणी वर्जित है क्योंकि यह राजा का अनिष्ट करती है।

सम्पूर्ण भूतों में जीवात्मा रुप से श्रीभगवान् बसे हुए हैं, इसलिए मित्र दृष्टि से सबसे स्नेह तथा सबका सम्मान करना चाहिए। इस पवित्र दिन में भारतीय संस्कृति एवं विज्ञान की अच्छी स्मृति दिलायी जाती है। क्योंकि विज्ञान जब तक मनुष्य जीवन में कार्य रुप में प्रगट नहीं होता, तब तक उसकी पूरी उपयोगिता सिद्ध नहीं होती। यही कारण है कि श्रावण शुक्ल पूर्णिमा के दिन भाई–बहिन, मित्र–मित्र, छोटे–बड़े, भाई परस्पर एक दूसरे के हाथ में राखी बाँधकर मेल मिलाप तथा प्रेम का परिचय प्रदान करते हैं।

व्रती को चाहिए कि इस दिन प्रातः स्नानादि करके वेदोक्त विधि से रक्षाबन्धन, पितृतर्पण और ऋषि पूजन करें। रक्षा के लिए किसी विचित्र व दिव्य वस्त्र या रेशम आदि की 'रक्षा बनावे। उसमें सरसों, सुवर्ण, केशर, चन्दन, अक्षत और दूर्वा रखकर रंगीन सूत के डोर में बाँधे और अपने मकान के शुद्ध स्थान में कलशादि स्थापन करके उस पर उसका यथाविधि पूजन करें। फिर उसे राजा, मंत्री, वैश्य या शिष्ट शिष्यादि के दाहिने हाथ में–

येन बद्धो बली राजा, दानवेन्द्रो महाबलः।
तेन त्वामनुबध्नामि रक्षे मा चल मा चल।।

इस मंत्र से बाँधें। इसके बाँधने से वर्ष भर तक पुत्र पौत्रादि सहित सब सुखी रहते हैं–

यः श्रावणे विमल मासिक विधानविज्ञो,
रक्षाविधान मिंदमाचरते मनुष्यः।
अस्ति सुखेन परमेण स वर्षमेकं,
पुत्र प्रपौत्र सहितः ससुहृज्जनः स्यात्।।

एक बार देव और दानवों में बारह वर्ष तक युद्ध हुआ। देवता विजयी नहीं हुए, तब देवगुरु बृहस्पति जी ने इन्द्र को सम्मति दी कि युद्ध रोक देना चाहिए। युद्ध के बन्ध होते ही इन्द्र की राज्यलक्ष्मी पर असुरों ने अधिकार कर लिया। इन्द्राणी इस समाचार से बहुत दुःखी हो गयी तब इन्द्राणी ने आत्मविश्वास के साथ कहा कि मैं कल इन्द्र के रक्षासूत्र बाँधूगी, उसके प्रभाव से इनकी रक्षा होगी और यह विजयी होंगे तथा राज्य लक्ष्मी को पुनः प्राप्त करेंगं। श्रावण शुक्ल पूर्णिमा को वैसा ही किया और इन्द्र के साथ सम्पूर्ण देव विजयी हुए।

रक्षाबन्धन भाई–बहिन का पवित्र पर्व है। भारतवर्ष की पराधीनता के दिनों में जबकि हिन्दू जाति एवं हिन्दूधर्म घोर संकट मे गुजर रहे थे, जबकि मुगल शासकों की अत्याचार, असभ्यता, बर्बरता, हिंसा, निर्दयता रुपी तलवार हमारी सभ्यता एवं संस्कृति का समूलोच्छेद करने के लिए तथा हमारी माँ–बहिनों की लाज एवं मर्यादा को लूटने के लिए अहर्निश चल रही थी, तब 'रक्षाबन्धन' न ही हिन्दू जाति को एक नई प्रेरण दी, एक नवीन मार्ग का संकेत दिया। वह राखी जो विगत समय में पति–पत्नी के प्रेम का एवं स्त्री के सौभाग्य रक्षा की प्रतीक थी, वही भाई–बहिन के पवित्र निश्च्छल प्रेमबन्धन के रुप में बदल गयी। ऐतिहासिक घटनायें बतलायी है कि उस काल में राजपूत रमणी अपनी मान–मर्यादा की रक्षा के लिए आवश्यकता पड़ने पर राजपूतों के पास इस रक्षा सूत्र (राखी) को भेज कर सहायता की याचना किया करती थी, इसके बदले में वे वीर भी अपनी धर्म बहिनों की रक्षा में हँसते–हँसते अपने प्राणों की बाजी लगा देते थे। राखी का यह निखरा हुआ रुप कितना निर्मल था कि जिसने निहारा–देखा वही मुग्ध हो गया। सूत के दिन कच्चे धागे में वह शक्ति संन्निविष्टि हुयी कि हाथों में बाँधते ही एक बार निर्जीव में श्री प्राणों का संचार हो जाता हैं इतिहास में ऐसे एक भी कायर राजपूत का नाम नहीं मिलता जिसने इन धागों की लज्जा की रक्षा में मर–मिटने में किंचित् मात्र भी संकोच का अनुभव किया हो। हिन्दू तो हिन्दू ही थे अन्य भाई भी मर मिटे थे।

महारानी करुणावती की गाथा इतिहास विख्यात है जब गुजरात के शाक बहादुरशाह ने उसके राज्य पर आक्रमण किया तो इस

शेष पेज 17 पर.....

ज्योतिष एवं वास्तुशास्त्र सीखिये
प्रमाण पत्र अखिल भारतीय ज्योतिष संस्था संघ (पंजी.) नई दिल्ली द्वारा
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान
भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, एम. जी. रोड़,
आगरा। फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719666777
ई मेल : mail@bhavishydarshan.in

फेंग शुई द्वारा सुखी जीवन का रहस्य

पवन कुमार मेहरोत्रा
ज्योतिषप्रभाकर एवं अंक विशारद
नज़र दोष विशेषज्ञ

प्रिय पाठकों पिछले अंक में मैनें आपको फेंगशुई के विषय में जानकारी दी थी तथा किस प्रकार हम अपने जीवन को अधिक सुखी बना सकते है, उन नियमों की जानकारी दी थी। इसी विषय में कुछ अन्य जानकारियाँ आपको यहाँ देने जा रह हूँ आशा है। यह आपके जीवन को लाभान्वित करेंगी।

कन्या का विवाह- पूर्णिमा का चन्द्रमा, विवाह के देवता का प्रतीक माना जाता है। चन्द्रमा जिन ऊर्जा का प्रतीक है। एक मीठा रसीला सन्तरा पूर्णिमा के दिन किसी जल स्त्रोत जैसे नदी, समुद्र, नहर आदि में प्रवाहित करने से वायु व जल का देवता कन्या का संदेश विवाह के देवता चन्दमा तक ले जाता है। जो कि कन्या के लिय मनचाहा वर जल्दी ही मिलवाने में अति सहायक होताहै। यह एक चीनी मान्यता है। फेंगशुई के अन्तर्गत यह माना जाता है। कि कन्या के शयनकक्ष में ऐसा चित्र हो जिसमें चाँद की रोशनी दिखती हो, उसे लगाना भी योग्य व कुशल वर मिलने में सहायक होता है।

वातावरण को आनन्दमय बनाता है, सुन्दर फूलदान- चाहें आप शादी शुदा हैं या कुंवारे घर में सौहार्द पूर्ण वातावरण बनाने में सुन्दर फूलदान बहुत महत्वपूर्ण योगदान देते है। सुन्दर चीनी मिट्टी से बने व शुभ चिन्हों से सुसज्जित विशेष आकार के फूलदान घर में प्यार तथा खुशी को बढ़ावा देते है।

दक्षिण पशिचम दिशा में पीले अथवा लाल रंग के फूलदान रखने से घरेलु वातावरण से नकारात्मक शक्ति विसर्जित होकर वातावरण आनन्दमय बनता है।

कुवारे लडको के लिए सुझाव- जिन लड़को के विवाह में दिक्कत आ रही हो यादि ध्यानपूर्वक वे अपने कमरे का निरीक्षण करें तो पायेगें कि उनके कमरे में पुरूष प्रधान वस्तुएँ अधिक मात्रा में है। जैसे कि फिल्मी हीरो या खिलाड़ी के पोस्टर, ब्रीफकेस, ऐशट्रे इत्यादि वस्तुऐं पुरूष शक्तियों को बढ़ाती है। जल्दी शादी अथवा स्त्री प्रधान ऊर्जा बढाने के लिए कमरे में सुन्दर फूल, सुन्दर स्त्रियों के चित्र, फूलदान, कलात्मक गहने आदि नारी प्रधान वस्तुऐं लगानी चाहिऐ।

शयन-कक्ष के दक्षिण-पश्चिम भाग में दोहरी खुशी संकेत लगाना गुलाब आदि लाल फूलों का गलदस्ता या चित्र लगाना, लाल रंग की मोमवत्तियाँ लगातार 43 दिनो तक जलाना मेनडेरियनडक का जोडा, लववर्ड का जोड़ा या पिरामिड़ रखना भी बहुत लाभकारी सिद्ध हुआ है।

अपना जन्मदिन अवश्य मनायें- फेंगशुई के अनुसार अपना जन्मदिन मनाना एक बहुत शुभ संकेत है। तथा इससे व्यक्तिगत ची शक्ति बढ़ती है। प्रत्येक वर्ष अपने जन्म दिन को भरपूर उत्साह के साथ अपने मित्रों व सगे-सम्बधियों के साथ अवश्य मनायें।

धन प्राति के उपाय- धन प्राप्ति के लिए घर के मुख्य द्वार के सामने लाफिंग बुद्धा रखे। जिनके कंधे पर धन की पोटली हो। रत्नो का पेड़ या क्रिस्टल ट्री घर के दक्षिण पश्चिम हिस्से में रखें। यह पेड़ घर में या दफ्तर में सुख समृद्धि को बहुत मात्रा में बढ़ा देता है। सुनहरी मछली को उत्तरी भाग में रखने से भी धन-सम्पत्ति तथा सुख-शान्ति बढती है।

शिक्षा हेतु उपाय- यदि आपका बच्चा पढ़ने में कमजोर है। तो आप यह उपाय अवश्य करें, कमरे को पूर्व दिशा में ले जाप तथा ऐजुकेशन टावर तथा स्फटिक का पिरामिड़ बच्चे की पढाई की टेबल पर रखे। यह निश्चय हैं कि आपके बच्चे की रूची पढ़ाई में जाग्रत हो जायेगी। ❋❋❋

पता परिवर्तन की सूचना अवश्य दें

अक्सर भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका के सदस्य अपना भवन बदल लेते हैं, किन्तु पता परिवर्तन की सूचना नही देते जिसके कारण भविष्य निर्णय द्वि-मासिक पत्रिका पुराने पते पर ही भेजी जाती रहती है, किन्तु आपको नही मिलती। अत: पता परिवर्तन की सूचना कार्यालय पर फोन कर के दें। फोन न. 9719666777, (0562) 2856666, 2525262

हमारे यहा रत्नों को लेब से टेस्टिड (Lab Certified) कराकर उपलब्ध करायें जाते हैं। रत्नों की 100% शुद्धता के लिये रत्न के साथ उसकी शुद्धता का सर्टीफीकेट दिया जाता हैं।

श्रावण मास का कौन सा सोमवार कितना उपयोगी

पं. अजय दत्ता
ज्योतिष एवं वास्तु परामर्शदाता

श्रावण महीने में चार महत्वपूर्ण सोमवार आ रहे हैं और ये सोमवार अपने आप में अद्वितीय योगों से संपन्न हैं। इन सोमवारों को की गई उपासनाएं एवं साधनाएं विशेष फल प्रदान करने वाली होती है। इन दिनों किये गये प्रयोग भी शीघ्र सुपरिणाम देने वाले होते है। प्रत्येक सोमवार अमूल्य धरोहर है अतः हमें सभी सोमवरों का सदुपयोग करना चाहिये और अपने भाग्य के दरवाजे पर हल्की सी दस्तक देकर खुशियों के संसार में प्रवेश करें।

1. पहला सोमवार व्रतः–दिनांक **29:07:2013** को श्रावण का पहला सोमवार है। इस सोमवार को विशेष योग बन रहे है। ऐसे योगों से संपन्न होने की वजह से यह सोमवार अपने आप में सिद्धि दिवस और सिद्धयोग बन गया है, ऐसे महत्वपूर्ण योग में निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए विभिन्न प्रयोग संपन्न किये जा सकते हैं।

1. लक्ष्मी प्राप्ति के लिए लक्ष्मी को घर में स्थायित्व देने के लिये।
2. नौकरी लगने, बेकारी दूर होने व नौकरी में प्रमोशन के लिये।
3. व्यापार वृद्धि एवं व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिये।
4. ऋण समाप्त होने एवं निरन्तर आर्थिक उन्नति के लिये।
5. जीवन में सभी दृष्टियों से पूर्ण भौतिक सुख संपन्नता एवं सफलता के लिये।
6. स्वयं का मकान होने व वाहन प्राप्ति के लिये।
7. आकस्मिक धन प्राप्ति, भूमि से द्रव्य लाभ, लॉटरी आदि से उत्तम योग के लिये।
8. आर्थिक दृष्टि से पूर्ण अनुकूलता और सफलता प्राप्ति के लिये।

शास्त्रों की दृष्टि से ये दिन इस प्रकार के प्रयोगों के लिए अद्वितीय है अतः साधकों को इसका पूरा लाभ उठाना चाहिये।

2. दूसरा सोमवारः–दिनांक 05:08:2013 को श्रावण का दूसरा सोमवार है। इस सोामवार को विलक्षण फल देने वाले योग बन रहे हैं जो कि अपने आप में महत्वपूर्ण हैं। ऐसे ही योगों से संपन्न होने के कारण ही यह सोमवार भी अति महत्वपूर्ण हैं अतः ऐसे महत्वपूर्ण योग में निम्न उद्दृश्यों की पूर्ति के लिए प्रयोग संपन्न किये जा सकते हैं।

1. मनोवांछित पति या पत्नी प्राप्ति के लिए या इच्छित प्रेमी अथवा प्रेमिका को वश में करे के लिये।
2. मनोवांछित पुरुष या स्त्री की हमेशा के लिए अपने अनुकूल बनाने के लिये।
3. पारिवारिक कलह दूर करने व गृहस्थ जीवन में पूर्ण अनुकूलता के लिये।
4. घर के पितृ दोष, गृहदोष, तांत्रिक दोष, आदि समाप्त करने के लिये।
5. किसी भी प्रकार की साधना में पूर्ण सफलता प्राप्त करने के लिये।
6. आश्चर्यजनक भाग्योदय प्राप्ति के लिए।
7. भगवान शिव के उनके दर्शन करने एवं शिवमय होने के लिए।

उपरोक्त कार्यो की सिद्धि के लिए यह सोमवार अपने आप में अत्यधिक महत्वपूर्ण है और प्रत्येक साधक इस सोमवार का विशिष्ट तरीके से प्रयोग संपन्न कर लाभ उठा सकता है।

3. तीसरा सोमवारः– दिनांक 12:08:2013 को श्रावण का तीसरा सोमवार है। श्रावण माह का यह तीसरा सोमवार अपने आप में दुर्लभ और महत्वपूर्ण है। सौम्य योग से संपन्न

शेष पेज 18 पर.....

घर, फैक्ट्री, दुकान, शोरूम, हॉस्पीटल, कॉलेज, पेट्रोल पम्प, सिनेमाघर,
कोल्ड स्टोरज एवं बड़े आद्योगिक प्रतिष्ठान के वास्तुदोषों का बिना
तोड़ फोड़ वैज्ञानिक निवारण एवं आंतरिक साज सज्जा

डॉ. महेश पारासर
भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

ज्योतिषीय द्रष्टिकोण में क्या होती हैं पिता (सूर्यदेव) की भूमिका?

पं. दयानन्द शास्त्री
विनायक वास्तु एस्ट्रो शोध संस्थान
पुराने पावर हाऊस के पास, कसेरा बाजार,
झालरापाटन सिटी (राजस्थान) **326023**

आकाश मंडल में ग्रहों की चाल और गति का मानव जीवन पर सूक्ष्म प्रभाव पड़ता है। इस प्रभाव का अध्ययन जिस विधि से किया जाता है उसे ज्योतिष कहते हैं। भारतीय ज्योतिश वेद का एक भाग है। वेद के छ अंगों में इसे आंख चानी नेत्र कहा गया है जो भूत, भविष्य और वर्तमान को देखने की क्षमता रखता है। वेदों में ज्योतिष को महत्वपूर्ण स्थान दिया गया है। वैदिक पद्धति पर आधारित भारतीय ज्योतिष फल प्राप्ति के विषय में जानकारी देता है साथ ही अशुभ फलों और प्रभावों से बचाव का मार्ग भी देता है लेकिन पाश्चात्य ज्योतिष सिर्फ दृष्ट फलों की बात करता है।

भारतीय ज्योतिष पद्धति निरयण (Indian Nirayan Astrology) के सिद्धांत को मानती है। जबकि पाश्चात्य ज्योतिष साय (Sayan Astrology) पर आधारित है। भविष्य को जानने की चाहत सभी मनुष्य में रहती है चाहे वह भारत का हो अथवा पश्चिमी देशों में रहने वाला हो। भविष्य जानने का तरीका भले ही अलग है परंतु ग्रह और ज्योतिष सिद्धांत को वह भी स्वीकार करते है एवं कई स्थानों पर दोनों में समानताएं भी हैं।

भारतीय पद्धति निरयण (Indian Nirayan Astrology) के सिद्धांत को मानता है जबकि पाश्चात्य ज्योतिष सायन (Sayan Astrology) पर आधारित है। भारतीय ज्योतिष पद्धति (Vedic Astrology) में अह्रष्ट फल का विचार अह्रष्ट निरयण मेषादि ग्रहों या निरयण पद्धति (Nirayan Astrolgoy) और ग्रह–वेध, ग्रहण सहित दृष्ट फल का विचार सयन मेषादि ग्रहों के आधार पर होता है। वेदों में कर्म के आधार पर तीन प्रकार के फलों का वर्णन किया गया हे इसे ही अह्रष्ट फल कहा गया है। इन अह्रष्ट फलों के विषय में पाश्चात्य ज्योतिष खामोश रहता है क्योंकि पाश्चातय ज्योतिष में अह्रष्ट फलों की परिकल्पा ही नहीं है। यहां ह्रष्ट फल का आंकलन सर्वेक्षण पद्धति के आधार पर होता है।

वेदों में ज्योतिष के तीन स्कंध बताये गये है– सिद्धांत स्कन्ध, संहिता स्कन्ध और होरा स्कन्धा व्यक्ति के जीवन पर ग्राहों का फल जानने के लिए जिस जन्म कुण्डली का निर्माण होता है उसका आधार होरा स्कन्ध है, यानी जन्म कुण्डली का निर्माण होरा स्कनध के आधार पर होता है। सिद्धांत स्कन्ध सृष्टि की उत्पत्ति और प्रलय काल के दौरान ग्रहों की स्थिति एवं काल गणना के काम आता है। संहिता स्कन्ध के आधार पर ग्रह, नक्षत्रों एवं आपदाओं, वास्तु विद्या, मुहूत्र, प्रश्न ज्योतिष के विषय में गणना किया जाता है।

भारतीय ज्योतिष की मान्यता के अनुसार व्यक्ति का जन्म और भाग्य का आधार कर्म होता है यानी भारतीय ज्योतिष कर्मफल और पुनर्जनम को आधार मानता है। पाश्चात्य ज्योतिष में पुनर्जन्म और कर्मवाद की मान्यता नहीं होने से सभी प्रकार के फलों का विचार सायन पद्धति से होता है। सायन पद्धति और निरयन पद्धति में यह अंतर है कि जहां निरयन में कोई ग्रह किसी राशि से ७ अंश पर होता है वहीं सायन पद्धति में वही ग्रह उससे दूसरी राशि के १ अंश पर होता है।

आप का भाग्य तभी साथ देगा जब आप कर्म ठीक होगा, और जब कर्म ठीक होगा तभी ज्योतिष के उपाय भी काम करेगे तो भी तब जब आप उससे रथा औश्र विश्वाश के साथ करेंगे, नहीं तो चाहे कितना भी बड़ा ज्योतिषी आ जाये वो कुछ नहीं कर सकता, क्योंकि कर्म भी ३ प्रकार के होते है। 1.दृढ़ कर्म। 2. दृढ़ अहढ कर्म। 3. अहढ़ कर्म।

1.दृढ़ कर्म– कर्म की इस श्रेणी में उन कर्मो को रखा गया हे जिनको प्रकृतिके नियमानुसार माफ नहीं किया जा सकता। जेसे कत्ल, गरीबों को उनकी मजदूरी न देना, बूढ़े मा–बाप को खाना न देना ये सब कुछ ऐसे कर्म है जिनको माफ नहीं किया जा सकता। ऐसा व्यक्ति अपने जीवन में चाहे किते ही शांति के उपाय करे लेकिन कोई भी प्रत्युत्तर उन्हें देख नहीं पड़ता है,

2. दृढ़ अहढ कर्म– कर्म की इस श्रेणी में जो कर्म आते है उनकी शांति उपायों के द्वारा की ज सकती है अर्थात् ये माफ किये जाने योगय कर्म होते हैं।

3. अहढ़ कर्म– (नगण्य अपराध) ये वे कर्म होते है जो एक बुरे विचार के रुप में शुरु होते हैं और कार्य रुप में परिणत होने से पूर्व ही विचार के रुप में स्वतः खत्म हो जाते हैं।अतः ये नगण्य अपराध की श्रेणी में आते है और थोड़े बहुत साधारण शांति–कर्मो के द्वारा इनकी शांति हो जाती है। ऐसे व्यक्ति ज्योतिष के विरोध में तो नहीं दिखते लेकिन ज्यादा पक्षधर भी नहीं होते।

ज्योतिष का एक जिज्ञासु विद्यार्थी होने के नाते कहना चाहूँगा कि सभी को अपनी दिनचर्या में साधारण पूजन कार्य और मंदिर जाने को अवश्य शामिल करना चाहिए। कुछ दिनों से एक ऐंसे विषय पर चर्चा का विचार मन में बन रहा था किन्तु समय अभाव के कारण विचार मन में ही उमड़–घुमड़ रहा था फिर सोचा कि क्यूँ न आज उस पर चर्चा कर ही ली जाए.. बात दरअसल यह है कि ढेरों कुंडलियों के अध्ययन के दौरान मेरे मन में एक ऐंसा पात्र जेहन में बिजली की तरह क्रौध रहा था जिस पर चर्चा करने से खुद को रोक पाना उचित नहीं था, खासतौर पर ज्योतिषीय दृष्टिकोण से तो बिलकुल भी उचित नहीं था। वो पात्र कोई और नहीं है "पिता है, क्या आप, हम या कोई और यह सोच सकता हे कि पिता भी अपनी संतान के लिए मृत्यु कारक बन सकता है?... शायद नहीं, पर यह सच है कि भी अपनी संतान के लिए मृत्यु का कारक बन सकता है। इसके दो उदाहरण मैं आपके समझ प्रस्तुत कर रहा हूँ..... पहला है रावण, जो स्वयं ही अपने पुत्र इंद्रजीत की मृत्यु का कारण बना, ताकि दूसरा उदाहरण है ध्रतराष्ट्र का जो अपने पुत्र दुर्योधन की मृत्यु का कारक बना।

शेष पेज 18 **पर**.....

वृद्धावस्था में रहें, अपेक्षाओं से परे

सुरेश अग्रवाल
आगरा

मनुष्य के जीवन की चार अवस्थाओ में अन्तिम अवस्था है वृद्धावस्था। मनुष्य की शारीरिक और मानसिक क्षमताओं में कमी हो जाने के कारण, उसे शेष जीवन गुजारने के लिए दूसरों के सहारे की आवश्यकता महसूस होने लगती है। लेकिन बुढापा बोझ नहीं हैं– उम्र का एक पड़ाव है। यह इतिहास साक्षी है। कि बहुत से बुजुर्ग लोगों ने वृद्धावस्था में ऐसे काम किए हैं जो उनके लिए बिल्कुल नये थे। आवश्यकता इस बात की है। कि आप वृद्धावस्था स्वंय को व्यस्त रखने की योजना और मानसिकता बना लें। आप वृद्धावस्था में आर्थिक रूप से पूरी तरह से सुरक्षित रहने के लिए कुछ धन बचाकर अपने पास रखें ताकि अपनी प्रतिदिन की आवश्यकतओं के लिए किसी के सामने हाथ न फैलाना पड़े।

अपनी खुराक घटाकर उतनी ही रखें, जिससे शरीर हल्का रहे। भोजन सुपाच्य एंव शाकाहारी हो। अधिक नमक चिकनाई व मीठे से परहेज करें। कमखाने वाला हमेशा निरोग रहेगा और गम खाने वाला (सहनशील) सदैव लडाई झगडों से बचा रहेगा।

अपने शरीर को उपयोगी कार्यो मे व्यस्त रखने के लिय कुछ रचनात्मक कार्य कीजिए, जिनमें उम्र कभी आड़े नही आती। हमें समाज ने बहुत कुछ दिया है– वृद्धावस्था में ही सही, आप समाज की सेवा करने के समाज सेवी सस्थाओं से जुड़े और नेतृत्व प्रदान करें। अन्यों के साथ अपने अनुभव शेअर करें। अपना खाली समय बच्चों के साथ और घर के करने योग्य कामों में बिताएँ। अपनी राय कमी नहीं थोपें। कभी कभी ग्रुप बनाकर दूरस्थ स्थानों पर घूमने जाएँ।

सूर्योदय से पहले उठें। नियमित सैर, व्यायाम, प्राणायाम् वन्दना तथा योग करें। अपनी दिन चर्या इस प्रकार रखिय कि आपकी व्यस्तता बनी रहे। जो व्यस्त है। वही मस्त है, जो खाली है। वह बबाली है। व्यस्त रहने से और श्रम करने से भूखमी लगेगी और नींद भी अच्छी आयेगी। खूब हँसे और हंसाये। मित्र बनें और मित्रता करें।

यदि आप परिवार के साथ रहते हैं, तो बेटों बहुओं की अलोचना टोका टाकी तथा उनकें कार्यो में हस्तक्षेप कदापि न करें। बच्चों के साथ रहने का सुख कम नही होता। हाँ, एक बात और, क्रोध कमी न करें। कमाऊ व्यक्ति का क्रोध परिवार के सदस्य सहन भी कर लेते हैं, परन्तु अब आप कमाऊ नही हैं– इस लिए आपका क्रोध कोई क्यों सहन करेगा? आप परिवार के सभी सदस्यों के साथ सदैव मित्रंवत् व्यवहार करें।

वृद्धावस्था में आप किसी से लेशमात्र अपेक्षा न करें, क्योंकि अपेक्षा पूरी न होने पर टैंशन होता है। बाबजूद इसके, आपकी उपेक्षा करने वालों की आप कमी उपेक्षा न करें, क्योकि ऐसा करने से उपेक्षा करने वाले को शर्मिन्दगी का अनुभव होगा और एक दिन वह आप से दूर हो जायेगा। लेकिन इसके विपरित यदि कोई आपसे किसी भी प्रकार की अपेक्षा करता है, तो आप अपनी सामथ्य के अनुसार पूर्वाग्रह छोड़कर उसकी अपेक्षा को अवश्य पूरा करें, फिर देखिये, आपको प्रचुर मात्रा में संतोष और सम्मान दोनों ही मिलेंगें। किसी की वाजिव अपेक्षा की कमी उपेक्षा न करें। वृद्धावस्था में पति पत्नी अलग–अलग रहने की गलती न करें। जीवन की अन्तिम बेला में हम सफर की जरूरत महासूस होती है। विशेष अवसरों पर जैसे जन्मदिन, वैवाहिक तिथि, त्यौहारों, परीक्षा में सफल होने, उन्नति, प्रोन्नति आदि अवसरों पर आप परिवार के सदस्यों का उपहार अवश्य दें और उनके द्वारा आपको दिये जाने पर आप भी स्वीकार करें। युवा पीढ़ी को भी अपने माता पिता की उपेक्षा नही करनी चाहिए। यदि आप अपने माता पिता का मार्यादित सम्मान करेंगें। तो आपके बच्चों में भी वैसे ही संस्कार के भाव उदय होंगें।वृद्धावस्था में केवल देने का ही भाव हो, लेने का नही। ❋❋❋

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री,
असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक
मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562–2856666, 2525262

वास्तु में दक्षिण दिशा का महत्व

श्रीमति रेनू कपूर
आगरा

वास्तुशास्त्र की मान्यतायें आजकल दिन प्रतिदिन तेजी से बढ़ती जा रही है। छोटे से लेकर बड़े शहरों तक में लोग वास्तु शास्त्र के आधार पर ही अपने भवनों व व्यवसायिक इमारतों का निर्माण करने लगे हैं। आवासीय भवन हो अथवा व्यवसायिक निर्माण कार्य दक्षिण दिशा के भग को वास्तु नियमों के अनुसार बनाना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। दक्षिण दिशा के स्वामी धर्म तथा मृत्यु के देवता है यम, दक्षिण दिशा का ग्रह मंगल है वास्तु पुरुष के अनुसार दक्षिण दिशा में सूर्य को यम माना गया है। सूर्य और मंगल दोनों ही इस दिशा में बहुत गर्म तथा शक्तिशाली होते हैं। सूरज और मंगल की तपिश अर्थात गर्मी इस दिश को अत्यधिक गर्म बना देती है।

जिस कारण कुछ लोग इस दिशा को अशुभ बता देते हैं। कहते हैं–दक्षिण दिशा से ही देवी दुर्गा माँ काली का रुप धारण करती है इसी कारण देवी को दक्षिण काली भी कहते हैं इसके अलावा दक्षिण भारत के मन्दिरों के ऊपर भी दक्षिण मूर्ति लगी होती है जो शांत भाव से दक्षिण दिशा की ओर देख रही होती है कहने का अभिप्राय यह कि जब हम दक्षिण मुखी देवी देवताओं की उपासना अत्यन्त श्रद्धा विश्वास और तन्यमयता से कर सकते हैं तो दक्षिणी मुखी भवन में निवास करने से क्यों डरें क्यों इस दिशा को अशुभ मानकर छोड़ दें। विद्यालयों में भी छात्रों की पीठ दक्षिण की तरफ होती है वे शिक्षको से अथवा गुरु से ज्ञान प्राप्त करते है जिससे उनमें आत्मविश्वास बढ़ता है और वे सफलता को प्राप्त करते है।

प्राचीन काल में भी लोग दक्षिण दिशा को अशुभ बताकर उत्तर, पूर्व मुखी भवन होने पर भी इस दिशा में दरवाजा अथवा खिड़की बनवाने से परहेज करते थे। लेकिन जैसे–जैसे अन्धविश्वास से दूर हो रहा है अधिकतर लोगों का यह विश्वास हो रहा है कि दक्षिण दिशा को वास्तुशास्त्र के अनुसार निर्माण करा कर शुभ लाभ की प्राप्ति की जा सकती है। भवन को सुख समृद्धि पूर्ण बनाया जा सकता है। ज्योतिष, वास्तुशास्त्र एवं फैंगशुई जैसे सम्माननीय शास्त्र आज सम्पूर्ण विश्व में ख्याति को प्राप्त कर सफल हो रहे हैं। क्योंकि इसके नियम व सिद्धान्त भव निर्माण में शत प्रतिशत सटीक बैठते हैं। जैसे दक्षिण दिशा में कुआँ, बोरिंग आदि होने से घर के मुखिया को मृत्यु तुल्य कष्ट होना आदि। वास्तुशास्त्र पूर्णरुप से विज्ञान पर आधारित होने के साथ–साथ अध्यात्मिकता का भी ज्ञान कराता है जैसे उत्तर पूर्व दिशा में जल संग्रह, पूजा स्थल होने से ऐश्वर्य लाभ–उत्तम संतान आदि का शुभ लाभ प्रापत होना। दक्षिण दिशा के भवन निर्माण में व्यक्ति को आवश्यकता है वास्तु जैसी श्रेष्ठ विद्या के नियमों को पूर्णरुप से पालन करने की वास्तु के ज्ञान से सुख शान्ति व समृद्धि का जीवन भर अनुभव लेकर वह परिवार को खुशहाल बना सकता है। दक्षिण मुखी भवन अथवा व्यवसायिक स्थल का निर्माण व आन्तरिक वस्तुओं का रख रखाव वास्तु के नियमों के विपनीत होगा तो इस दिशा के दुष्परिणाम धीरे–धीरे दिखाई देने लगते है कभी–कभी इन दोषों को दूर करना भी कठिन हो जाता है दक्षिण दिशा के दोषों का निवारण तत्काल करा लेना चाहिये इस दिशा में काल पुरुष की कुंडली के अनुसार दशम स्थान आता है जिसके कारण व्यक्ति की नौकरी रोजगार व प्रगति में वाधा आदि दोष उत्पन्न हो जाते हैं। इस दिशा में यम, गंधर्व, मृग, पूर्षा, वितथ और क्षत देवताओं का निवास माना जाता है ये सभी देवता अपने स्वभाव के अनुसार भवन के मुखिया को गुण अवगुण से युक्त बनाते हैं जैसे दक्षिण दिशा के भवन में प्रवेश द्वार होने पर गृहस्वामी का स्वभाव भी इस दिशा के देवता मंगल के अनुसार क्रोधी, गर्विला व साहसी होगा उसे चटपटी व रुचिकारक चीजें खाने का शौक बना रहेगा। प्रमुख रुप से चार मुख्य दिशायें और चार उपदिशायें होती है, हर दिशा तथा उपदिशा अपने गुण दोषों के अनुसार फल देती है। वास्तुशास्त्र दिशाओं के अनुसार ग्रह निर्माण कराने का ज्ञान देता है चाहे वह दिशा कोई भी हो। दक्षिण दिशा का वास्तु सम्मत निर्माण व्यक्ति के जीवन को सुखमय बनाता है आर्थिक कठिनाईयों को दूर करने व्यक्ति को स्वस्थ व सम्पन्न बनाता है दिशा अनुसार वास्तु के नियमों को जीवन शैली में अपनाा मानो स्वंय में संतोष व समृद्धि से युक्त जीवन सुनिश्चित करना है। ❋❋❋

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

16 अगस्त - 15 सितम्बर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ-इस मास में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यवसाय में रूकावटें आने की संभावना रहेगी। अर्थ हानि होने की संभावना रहेगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– आर्थिक लाभ होने पर भी हानि का भय रहेगा। प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति बनने की संभावना रहेगी। भाइयों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। अपमान होने का भय रहेगा। निजी लोगों से परेशानी होने की संभावना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। पत्नि का पूर्ण सहयोग एवं लाभ की प्राप्ति होगी। शत्रुओं पर आप हावी रहेंगे। मित्रों का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। फालतू के विवादों से बचें। मित्रवर्ग से अनबन रहेगी।

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो–कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। कारोबार ठीक रहेगा। पत्नि को शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। सम्पत्ति से लाभ होने की संभावना रहेगी। मास का अन्त शुभ रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– प्रियजनों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। फालतू के विवादों में न पड़े। गुप्त शत्रु से सावधान रहें। घरेलू परेशानी निरन्तर लगी रहेगी।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस मास में शरीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव रहेगा। नई योजना से लाभ की प्राप्ति होगी। मित्रों से अनबन की स्थिति बनेगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- इस मास में स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आर्थिक लाभ होने की सभांवना रहेगी। यात्रा में कष्ट होने की संभावना रहेगी। शत्रु प्रबल रहेगें। शुभ कार्यो में मन लगेगा।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। दुर्घटना होने की संभावना रहेगी। कारोबार मे रूकावटें आने की संभावना रहेगी। भाग्य से सहयोग नहीं मिलेगा। सन्तान पक्ष से चिन्ता लगी रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- सम्पत्ति संबंधित विवाद होना भी संभव हैं। कार्य में निरन्तर लाभ की प्राप्ति होगी। प्रियजनो का पूर्ण सहयोग मिलेगा।

मीन (PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- आर्थिक हानि होने की सभांवना रहेगी। इस मास में स्वास्थ्य ठीक नहीं रहेगा। मित्रों का पूर्ण सुख प्राप्त होगा। व्यवसाय में रुकावटें आयेंगी। पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की सभांवना रहेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

अगस्त	सितम्बर
17 पुत्रदा एका.व्रत **18** प्रदोष व्रत **19** श्रावण सोमवार व्रत, चतुर्दशी व्रत **20** मंगला गौरी व्रत, **20** पूर्णिमा व्रत, रक्षाबन्धन **23** कंजली तृतीया **24** श्री गणेश चतुर्थी व्रत **26** षष्ठी हलष्ठी **27** शीतला सप्तमी **28** श्री कृष्ण जन्माष्टमी व्रत **29** गोगा नवमी	**1** अजा एका. व्रत **2** गौवत्स द्वादशी, प्रदोष व्रत **5** शिक्षक दिवस, अमावस्या व्रत (पोला त्योहार) **8** श्री गणेश चतुर्थी व्रत, स्वामी शिवानंद जं., गौरी (हरतालिका तीज व्रत) तृतीया **9** पं. गोविन्द बल्लभ पंत जं., श्री गणेश चतुर्थी व्रत **10** ऋषि पंचमी **11** श्री बिनोबा भावे जं., सूर्य षष्ठी **13** राधाष्टमी **14** भारतीय हिन्दी दि., हरि जं. **15** भा. इन्जीनियर्स डे, जलझूलनी एका व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त

अगस्त – नही है। सितम्बर– नही है।

गृह प्रवेश मुहूत

अगस्त– 19, 21 सितम्बर– नही हैं।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

अगस्त–17,19, 21

सितम्बर– 7, 8, 12, 13, 15,

नामकरण संस्कार मुहूर्त

अगस्त– 19, 21, 22

सितम्बर–1, 8, 12, 15,

सर्वार्थ सिद्ध योग

अगस्त	सितम्बर
18 ता. 18:35 से 29:45 तक	02 ता. सू.उ. से 26:43 तक
25 ता. 07:41 से 29:47 तक	03 ता. सू.उ. से 28:44 तक
27 ता. 10:21 से 29:48 तक	08 ता. सू.उ. से 08:30 तक
28 ता. सू.उ. से 29:48 तक	11ता. 07:32 से 30:35 तक
	15 ता. सू.उ. से 24:18 तक

16 सितम्बर - 15 अक्टूबर

मेष (ARIES)- चू, चे, चो, ला, ली, लु, ले, लो, अ– शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी। आपकी आय का स्रोत्र अच्छा रहेगा परन्तु व्यय आय के अनुपात में ज्यादा होगा। सम्पत्ति से लाभ प्राप्त होगा। स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा।

वृष (TAURES) - इ, उ, ए, ओ, वा, वी, वू, वे, वो– घरेलू परेशानिया भी लगी रहेंगी। स्थान परिवर्तन होने की संभावना रहेगी। आपके प्रियजनों या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। कारोबार या व्यवसाय में रूकावटें आयेंगी।

मिथुन (GEMINI)- क, की, कू, घ, ढ़, छ, के, को, हा– वृथाविवाद से दूर रहें। इस मास में सन्तान को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगें। आपको अपने कार्य से लाभ की प्राप्ति होगी।

कर्क (CANCER)- ही, हू, हे, हो, डा, डी, डू, डे, डो–इस माह में पित्तविकार रोग से पीड़ित होने की संभावना रहेगी। कारोबार,व्यवसाय ठीक चलेगा। आर्थिक लाभ होगा परन्तु किर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। मास के अन्त मे अच्छा लाभ प्राप्त होगा।

सिंह (LEO)– मा, मी, मू, मे, मो, टा, टी, टू, टे– इस मास में आपको मानसिक तनाव अधिक रहेगा। प्रियजनों मे से किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आर्थिक लाभ होगा परन्तु फिर भी हानि का भय निरन्तर रहेगा। घरेलू परेशानियों की वृद्धि होगी

कन्या (VIRGO)– टो, प, पी, पू, ष, ण, ठ, पे, पो– आपको पत्नि का सहयोग एवं पूर्ण सुख मिलेगा। इस मास मे आर्थिक होने की संभावना रहेगी। मानसिक तनाव अधिक रहेगा। आपके समय के अनुसार काम होते रहेंगें। स्वास्थ्य ठीक नही रहेगा।

तुला (LIBRA)– रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तू, ते– इस माह में आपको राज्यभय रहेगा। कारोंबार या व्यवसाय व नोकरी में भी कुछ रूकावटे उतपन्न होंगी। रक्त-पितर जैसे रोगो से आप ग्रस्त रहेंगे। घरेलु अच्छे एवं गुण वाले लोगों से मेल सूत्र बढ़ेगा।

वृश्चिक (SCORPIO)- तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू– इस माह में आपका शारीरिक स्वास्थ्य खराब रहने की संभावना रहेगी। आपको प्रियजनो का सुख एवं साथ मिलेगा। शत्रु पक्ष आप पर हावी रहेंगें। क्रोध मे निरन्तर वृद्धि होगी।

धनु (SAGITTARIUS)- ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, ढ़ा, भे- आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको सन्तान पक्ष से चिन्ता बनी रहेगी। अपने प्रियजनों से मनमुटाव की स्थिति होने की संभावना रहेगी। घरेलू परेशानियां लगी रहेगी।

मकर (CAPRICORN)- भो, जा, जी, खी, खू, खे, खो, गा, गी– घरेलू परेशानिया निरन्तर बढ़ेगी। धन हानि होने की संभावना रहेगी। आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। आपको सन्तान की तरफ से चिन्ता रहेगी।

कुम्भ (AQUARIUS)- गू, गे, गो, सा, सी, सू, से, सो, दा- आपको अपनो का सहयोग मिलेगा। नई-नई योजानओं से लाभ की प्राप्ति होगी। इस माह में स्वास्थ्य ठीक रहेगा। संबध में या रिस्तेदारों में किसी को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी।

मीन(PISCES)- दी, दू, थ, झ, ञ, दे, दो, चा, ची- आपका कारोबार ठीक ठीक चलेगाा। आपकी पत्नि को शारीरिक कष्ट होने की संभावना रहेगी। आपको यात्रा में शारीरिक एवं आर्थिक कष्ट होना भी सभंव हैं। शत्रुओं की संख्या में वृद्धि आयेगी।

पुष्पित पारासर
ज्योतिषऋषि, वास्तुऋषि, अंकविशारद

भारतीय अन्य पर्व त्यौहार

सितम्बर	अक्टूबर
16 वामन द्वादशी **17** विश्वकर्मा पूजन, प्रदोष व्रत **18** अनन्त चतुर्दशी, शिरडी वाले साई बाबा जं. **19** पूर्णिमा श्राद्ध पक्ष प्रारम्भ **20** प्रतिपदा श्राद्ध **21** द्वितीय श्राद्ध **22** तृतीया श्राद्ध **23** चतुर्थी श्राद्ध **24** पंचमी श्राद्ध **25** षष्ठी श्राद्ध **26** सप्तमी श्राद्ध **27** विश्व पर्यटक दिवस, अष्टमी श्राद्ध **28** नवमी श्राद्ध **29** दशमी श्राद्ध **30** एकादशी श्राद्ध, बैंक अर्द्ध वार्षिक लेखाबंदी	**1** द्वादशी श्राद्ध **2** महात्मागांधी जं. , लाल बहादुर शास्त्री जं., प्रदोष व्रत, त्रयोदशी श्राद्ध **3** चतुर्दशी श्राद्ध **4** अमावस्या श्राद्ध **5** शरदीय नवरात्र प्रारम्भ **6** द्वितीय नवरात्र **7** तृतीय नवरात्र **8** चतुर्थ नवरात्रा, भारतीय वायु सेना दिवस **9** ललिता पंचमी व्रत **10** छठा नवरात्रा **11** सरस्वती पूजन **12** दुर्गाष्टमी **13** महानवमी, विजयदशमी **15** पाप कुशा एकादशी व्रत

ग्रहारम्भ मुहूर्त

सितम्बर– नही है। अक्टूबर– नही है।

गृह प्रवेश मुहूर्त

सितम्बर– नही है। अक्टूबर – नही है।

दुकान शुरू करने का मुहूर्त

सितम्बर–19, 20

अक्टूबर– 6, 7, 9, 11, 14,15

नामकरण संस्कार मुहूर्त

सितम्बर– 22, 26, 29, 30

अक्टूबर – 6, 14

सर्वार्थ सिद्ध योग

सितम्बर	अक्टूबर
16 ता. सू.उ. से 22:25 तक	01 ता. सू.उ. से 12:53 तक
20 ता. 17:14 से 29:54 तक	09 ता. सू.उ. से 12:06 तक
22 ता. सू.उ.. से 17:46 तक	13 ता. सू.उ. से 06:21 तक
24 ता. सू.उ. से 21:02 तक	
25 ता. सू.उ. से 29:53 तक	
29 ता. 08:11 से 29:56 तक	
30 ता. सू.उ. से 10:46 तक	

एक्स्ट्रा मैरिज अफेयर यानी ग्रहों का खेल

मोनिका गुप्ता
ज्योतिष ऋषि, शास्त्राचार्या
टैरो कार्ड रीडर

एक्स्ट्रा मैरिज अफेयर आज एक आम बात सी हो गयी है। आधुनिक समय में ये चीजें आम सी हो गयी है। लोगों की लाइफ स्टाइल चेंज हो गयी है। एक्स्ट्रा मैरिज अफेयर दाम्पत्य जीवन को बरबाद कर देता है। पर कौन से ग्रह हैं। जो इस तरह के अफेयर को जन्म देते हैं। आइये जाने–

शुक्र प्रेम का प्रधान ग्रह माना जाता है। शुक्र के साथ मंगल अथवा राहु का सम्बंध हो जाये तो ऐसे युवा को लव–रिलेशनशिप आगे बढ़ता है। यानी रिलेशनशिप में वह सेक्स का प्रयोग करता है। लेकिन ऐसे लोगों के सम्बन्ध लॉंग टाइम न होकर बहुत शार्ट टर्म होते है। इनका विवाह भी ज्यादा दिनों तक टिक नही पाता। और अक्सर ये लोग नये रिलेशन बनाने को तैयार रहते है।

लेकिन यदि कुण्डली में गुरू बलवान हो तो प्रेम को स्प्रीचुअल डेफिनेशन देता है। यहाँ तक की लीव इन रिलेशन तक ले जाते हैं।ग्रहों के अलावा होरोस्कोप के हाउस का भी प्रेम के मामले में महत्व है। जन्मकुण्डली के पाचवे और सातवें भाव उस व्यक्ति के प्रेम पक्ष को दर्शातें है। इन दोनों भावों के स्वामी एक–दूसरे के भाव में बैठ जायें अथवा इनकी युति हो या दृष्टि सम्बन्ध करें तो ऐसे लोगों के प्रेम पक्ष मजबूत होता हैं। ऐसे लोगों के एक्स्ट्रा मैरिज अफेयर भी अक्सर देखे गये हैं। ❋❋❋

शेष पेज 5 से आगे .....

धनु का स्वामी बृहस्पति अष्टम में जाकर उच्च का होता है और द्वितीय भाव में जाकर नीच का हो जाता है। कर्क राशि अष्टम में पड़ने के कारण चन्द्रमा अष्टमेश हो जाता है। यदि चंद्रमा कुंडली में ठीक हुआ तो जातक का मन विचलित रहता है। इसमें लक्ष्य भेदने की क्षमता तो होती है लेकिन खराब चंद्रमा होने के कारण लक्ष्य ही तय नहीं हो पाता इस लग्न वालों को अपने गुरु का हमेशा सम्मान करना चाहिये। यदि आत्मबल में कमी हो तो पुखराज धारण करें। अपने भाग्य को बलवान बनाने के लिए प्रातः सूर्य को जल दें।

विशेषताऐं

1. इनकी दृष्टि में धन सबसे महत्वपूर्ण नहीं होता है।

2. ठंड से बचकर रहना चाहिये, क्योंकि कफ प्रधान होते हैं। गलत बात को कतई बरदाश्त नहीं कर पाते हैं।

3. मेहमानों की आवगत में कोई कमी नहीं छोड़ते है।

❋❋❋

सफेद आक–सौभाग्य व समृद्धि वर्धक

पं. दिलीप उपाध्याय
आगरा

कर्ज मुक्ति तथा समृद्धिदायक श्वेतार्क गणपति का प्रयोग अत्यन्त प्रभावी माना जाता है। इनका प्रयोग करने से व्यापार में वृद्धि के साथ–साथ धन सम्पत्ति व यश की प्राप्ति होती है। आक के पौधे सफेद आक की किस्म होती है। इसे मदाक भी कहा जाता है। इसका पत्ता तोड़ने पर दूध निकलता है तथा यह पौधा पत्ती व फूल सफेदी लिये होता है। इस पौधे को धर में भी पूरी श्रद्धा के साथ इसलिये लगाते है। क्योकि यह वास्तुदोष से बचाने के साथ–साथ धन समृद्धि भी करता है।

पुष्प नक्षत्र में इस सफेद आक के पौधे को जल चढाकर व धूपबत्ती करके इसकी जड़ निकाल कर गणेश जी की आकृति वना ले। 7 से 8 वर्ष में पौधे की जड़ अपने–आप गणेश जी का रूप लेली ती है। इस मूर्ति का गंगाजल से धोकर घी व शहद लगाकर सात दिन तक रखे। उसके वाद मूर्ति को पंचामृत से धोकर पूजा स्थल पर रखे व धन दीप, पान सुपारी, लडडू व दुर्वा आदि अर्पित करे व नित्य 108 वार एक माला निम्न मंत्र का जाप करे ऊँ नमों भगवते विनायकाय प्रसन्नाथ ही स्वाह।

ऐसा करने पर गणेश जी अपनी रिद्धि–सिद्धि एंव शुभलाभ के साथ आपके यहां निवास करेंगें। जहाँ गणेश जी हो वहाँ लक्ष्मीजी का भी वास होता है। जहाँ गणेशजी व लक्ष्मीजी का निवास होगा जहाँ किसी भी प्रकार का संकट नही हो सकता अतः इस प्रयोग के ऋण का नाश तो होता ही है साथ ही वास्तुदोष भी शांत होता है।

यदि घर में किसी प्रकार का वास्तुदोष है और आप उसको दूर करने में असमर्थ है तो अपने घर में श्वेतार्क का पौधा उस जगह लगाये जिससे घर में मुख्य द्वार से प्रवेश करते ही पौधा दिखाई दे। इस पौधे पर बुधवार को सिन्दूर व जल चढ़ावे व दीपक जलावे ऐसा करने से वास्तुदोष दूर होकर समृद्धि होती है। यदि घर में आपसी कलह रहता है। धन का आगमन नही होता। आर्थिक स्थिति खराब होती जा रही हो व बार–बार कर्ज लेना पडता हो तो अपने घर के सवसे ऊपरी भाग पर पंचमुखी हनुमान की मूर्ति का तस्वीर इस प्रकार लगानी चाहिए कि वो बाहर सडक की ओर देखती हुई होनी चाहिए। ऐसा करने से घर के उपद्रव शांत होते है व सुख समृद्धि बढती है। शत्रुओं द्वारा तात्रिक अभिचार भी शांत हो जाते

❋❋❋

बेकार की सोच

(मामा की कलम से)

विजय शर्मा
आगरा

गिद्ध चित्रवर्ण को कथा सुनाने लगा–

देवीकाटे नाम के नगर में देव शर्मा नाम का एक ब्राहाण रहता था। उसकी आजीविका का साधन केबल यजमानों द्वारा दिया गया दान ही होता था और अन्य कोई उसके पास ऐसा जरिया नहीं था जिससे कि वह अपनी आजीविका की पूर्ति कर सकता।

वह यजमानों के द्वार पर जाता और कुछ प्राप्त हो जाने पर अपने घर आ जाता है। उसका रोज का यही किस्सा था।

एक मेघ संक्रान्ति के दिन उसे यजमान से सत्तू से भरा सकोरा मिल गया। उसे लेकर देव शर्मा वापस अपने घर की ओर चल दिया।

गर्मी का मौसम था। नीचे से रास्ते की गर्म–गर्म मिट्टी उसके पैर जला रही थी और ऊपर से जलता हुआ सूरज उसके सिर पर आग बरसा रहा था।

धूप से बचने के लिए उसने इधर–इधर नजर दौड़ायी तो उसे एक ओर कुम्हार का घर दिखाई पड़ा। उस घर को देखकर उसे लगा मानो डूबते को तिनकें का सहारा मिल गया हो।

कुम्हार के घर के पास मिट्टी के बर्तनों का ढेर लगा हुआ था। उसने अपना सत्तू का सकोरा वहां रखा और हाथ में डण्डा लेकर उसकी रखवाली करने लगा।

वह बार–बार डण्डा हिलाते हुए सोचने लगा– जब मैं सत्तू वाले इस सकोरें को बेचूंगा तो मुझे दस कौड़ियां प्राप्त होंगी, फिर मैं इसी कुम्हार से कौडियों के घड़े और सकोरें खरीद लूंगा। उनको बेचूंगा और इस तरह कई बार बेचने पर जब मेरे पास बहुत पैसे हो जायेंगे तो मैं एक कपड़े की दुकान खोल लूंगा।"

इस प्रकार एक दिन मैं लखपति बन जाऊंगा। लखपति होकर चार विवाह करुंगा। उन चारों पत्नियों में से जो सबसे सुन्दर होगी उसे अपनी पटरानी बना दूंगा। जब कभी वे आपस में सौतिया डाह के कारण लडेंगी तो मैं डण्डे से एक–एक की पिटाई करुंगा।

कुम्हार तोड़–फोड़ की आवाज सुनकर दौड़ा आया। उसने अपने विकाऊ बर्तनों को मिट्टी होते देख तो ब्राह्मण को उसी के डण्डे से पीटने लगा।देव शर्मा पिटता जा रहा था और कहता जा रहा था–"अरे भई कुम्हार! मैंने यह सब जान–बूझकर नहीं किया–भईया, मुझे क्षमा करे दे। मैं बेगुनाह हूं। मैं तेरे बर्तनों का हरजाना दे दूंगा–तेरे बर्तनों के साथ तो मेरा सकोरा भी चला गया जिसमें मेरे खाने के लिए सत्तू था।"

कुम्हार ने उसकी एक न सुनी और इतना मारा कि वह वहीं ढेर हो गया।कथा सुनकर मन्त्री गिद्ध बोला, "इसीलिए मैं कहता हूं कि भविष्य को लेकर व्यर्थ की सोच नहीं करनी चाहिए वरना पछताना पड़ता हैं।"

मन्त्री गिद्ध की बात सुनकर राजा चित्रवर्ण धीरे से बोला, "तो मुझे सलाह दो कि अब मैं क्या करुं?"

गिद्ध प्रत्युत्तर में बोला, "महाराज! जैसे मदमस्त हाथी के पागलपन का सारा दोष महावत के ऊपर जाता है वैसे ही घमण्डी राजा के कुमार्गी होने सारा दोष मन्त्री के ऊपर जाता है और उसी का अपयश होता है। यह बताइये कि शत्रु का किला क्या हम लोगों ने सेना के बल पर तोड़ा था या आपके प्रताप और उद्यम से?"

चित्रवर्ण को कहना पड़ा–"वह तो आपके द्वारा सुझाए गए उपाय से टूटा था।"

गिद्ध बोला, "महाराज! यदि मेरी सलाह मानते हैं तो अब हिरण्यगर्भ से सन्धि कर लें। कारण यह है कि अब वर्षा ऋतु प्रारम्भ होने वाली है। ऐसे समय में युद्ध पुनः होने पर अपने देश लौट पाना भी कठिन हो जाएगा। हमने विजय प्राप्त की है और यश भी मिला है। अब यहां और अधिक समय ठहरना उचित नहीं हैं।"

गिद्ध अपने राजा को बराबर सुझाव दे रहा था और राजा भी उसकी हर बात को मान रहा था। इसका कारण यह था कि उसने गिद्ध की एक सलाह ही नहीं मानी थी जिसका उसे इतना बड़ा

यदि आप ज्योतिष एवं वास्तु सम्बन्धित किसी भी समस्या के समाधन की उचित सलाह चाहते हैं। लिखें या ईमेल करें–

ज्योतिष परामर्श शुल्क रु. 500/- वास्तु परामर्श शुल्क रु. 1100/- (मकान का नक्सा आवश्यक)

परामर्श शुल्क ड्राफ्ट/ मनीआर्डर द्वारा निम्न पते पर भेज सकते हैं या महेश चन्द शर्मा के एस. बी. आई, एस. एन. एम. सी. शाखा, आगरा, खाता न. 10039621088, में जमा करा दे।

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा।
फोन : 0562-2856666, 2525262, 9719005262
E-mail : mail@bhavishydarshan.in

नुकसान उठाना पड़ा था कि उसे युद्ध में अपने सैकड़ों सैनिक बिना जरुरत मौत के घाट उतरवा लिये थे। अब राजा गिद्ध की वही बात सुन रहा था जो गिद्ध महाराज कह रहे थे। गिद्ध ने आगे कहा, "राजन! हो सकता है कि आपको मेरी बात कड़वी लगे, किन्तु शास्त्रों का कथन है कि राजा का सच्चा शुभचिन्तक वही होता है जो धर्म को सामने रखकर खरी बात कहे, चाहे वह राजा को भली लगे या बुरी। इसी में राजा का कल्याण है।"

राजा चित्रवर्ण को गिद्ध की बात एक बार तो कड़वी अवश्य लगी, परन्तु फिर वह सोचने लगा कि गिद्ध भी में हमें गलत सलाह नहीं देता और शास्त्रों के माध्यम से ही अपनी सलाह का समाधान करता है। यही हमारा सच्चा शुभचिन्तक है।गिद्ध मन्त्री की बात जारी थी। वह कह रहा था– "आप ही सोचिए महाराज, कि मित्रों, सैनिकों और देश–गौरव को युद्ध की आग में झोंककर कौन समझदार अपने आपको सन्देह के घेरे में डालना चाहेगा।"

गिद्ध को अहसास हो गया था कि वे युद्ध में पूर्ण रुप से विजय प्राप्त नहीं कर सकते। यदि विजय प्राप्त हो भी योगी तो युद्ध में उनके और भी बहुत–से सैनिक मारे जाने का खतरा है।गिद्ध नहीं चाहता था कि और सैनिक मारे जाएं। इसलिए वह राजा को सुझाव पे सुझाव देकर उसे सन्धि के लिए मजबूर कर रहा था। गिद्ध ने बताया–"राजन! जब युद्ध में विजय निश्चित नहीं होती तो बराबर के शत्रु के साथ सन्धि कर लेनी चाहिए। देवताओं के गुरु बृहस्पति का यही मत है कि जिस कार्य के पूरा हो में सन्देह हो, वह कार्य नहीं करना चाहिए.....।"

"तो क्या हम इस युद्ध में विजयी नहीं होगे–मन्त्री महाराज?" राजा चित्रवर्ण काफी देर चुप रहने और अपने मन्त्री की बात सुनते रहने के बाद बोले।गिद्ध साफ–साफ तो नहीं कह सकता था, परन्तु उसने साहस खोए बिना राजा की बात का उत्तर दिया, "नहीं महाराज! आप मेरी बात को इस तरह समझियेगा कि मैं आपको बुजदिल साबित करने की कोशिश कर रहा हूं बलिक यूं समझियेगा कि मैं अपनी और शत्रु की सेना के जवानों तथा सेनापतियों की सलामती चाह रहा हूं।"

"इसमें हमारी कम शत्रु की सलामती के अधिक अवसर हैं।" राजा चित्रवर्ण अपना सीना फुलाकर बोला, "हमारे सैनिक तो अब भी युद्ध के लिए तैयार हैं और चाहते हैं कि हम अपनी पूर्ण विजय प्राप्त करके ही अपने देश लौटें।"

"सही है, आपकी बात और आपके सैनिकों की बात, परन्तु एक बात मेरी और सुन लीजिए–युद्ध से विनाश ही होता है। कभी–कभी तो दोनों पक्षों का होता है।" गिद्ध धैर्य धरता हुआ कह रहा था, मगर उसे राजा की नीयम पर अब भी शक हो रहा था कि व फिर कोई नई गलती करने जा रहा है। यही सोच–सोचकर गिद्ध के सिर में दर्द होने लगा था। वह राजा चित्रवर्ण को हर हाल में सन्धि पर मजबूर होकर पर तुला था। उसने एक बात और सुनाई–"महाराज! आपने सुना होगा–सुन्द और उपसुन्द दोनों बराबर की टक्कर के थे, आपस में लड़कर दोनों नष्ट ही हुए।"

राजा चित्रवर्ण ने पूछा, "वे कौन थे?"

मन्त्री ने कहा–"सुनिए, मैं उनकी कथा सुनाता हूं–।"

❋❋❋

शेष पेज 7 से आगे.....

राजपूत रमणी ने तत्कालीन शासक हुमायूँ को राखी भेजकर अपनी सहायता के लिए पुकारा था। यह एक कठिन परीक्षा थी जबकि उसकी सेनायें अफगानों पर विजय प्राप्ति में लगी थी और करुणावती की सहायता करने पर उसे लड़ना भी अपने ही भाई मुस्लिम शासक से था, परन्तु हुमायूँ का मानव जो उसके अन्तर्मन में बैठा हुआ वह भाईपन जो कच्चे धागों (राखी) को प्राप्त कर सजग हो गया था। सम्पूर्ण चिन्ताओं से मुक्त हुआ हुमायूँ एक हिन्दू बहिन द्वारा भेजी गयी राखी की मर्यादा की रक्षा करने के लिए सेना सजाकर आखिर मारवाड़ पहुँचकर ही रहा। यह एकता का मूल महामंत्र एवं संगठन शक्ति का प्रतीक है। जीवन को स्फूर्ति देने वाला रोम–रोम में नवीनता का संचार करने वाला है। प्रत्येक हिन्दू को इसे बड़े उत्साह से मनाना चाहिए। यह तो मानवमात्र को नवीनता का संदेश देता है।आज भारतवर्ष में इस त्यौहार के लिए एक से एक दिव्यातिदिव्य, नवीन से नवीनतम, विभिन्न रंगो, डिजायनों रुपों, आकृतियों की राखियाँ छोटी–बड़ी सभी दुकानों पर प्राप्त हो जाती है और तो और सुन्दर–सुन्दर मोती, भारतीय मुद्रा तथा आभा व रोशनी से परिपूर्ण प्लास्टिक धातु व अन्यान्य वस्तुओं से भी राखी को सजाकर सँवार कर उपलब्ध कराया जाता है तो मँहगे से मँहगे दामों में प्राप्त होती हैं। विचार कर देखा जावे तो राखी का जो रुप पूर्व में था वह वर्तमान में विकृत हो गया है। प्रेम तो कच्चे धागे में ही है क्योंकि किसी कवि ने कहा है

मुस्कान बनाने से नहीं बनती स्वयं नीकी होती है।
नजर भी बनाने से हनी बनती स्वयं तीखी होती हैं।
ऐ चौराहे पर सज-धजकर चलने वालो, जरा ध्यान रखो। दुकान वहीं सजाया करते हैं जिनकी मिठाई फीकी होती है।

राखी का त्यौहार हाथ की सजावट के लिए नहीं है। यह तो प्रेम सौहार्द की वह अटूट सम्बन्ध है जो कभी खत्म नहीं होत। इस त्यौहार पर ही जिनकी शादीयाँ इसी वर्ष हुई होती हैं सोगियाँ लेकर कन्या के यहाँ आते हैं। कन्या सम्पूर्ण श्रावण माह में माईके में ही रहती हैं और सखी सहेलियों के साथ सुन्दर–सुन्दर गीत–भजन गाती हुई झूला झूलना, नृत्य क्रीड़ा, बाद्य क्रीड़ा आदि का भरपूर आनन्द लेती हैं। व्रजमण्डल में देव मन्दिरों में नित नवीन झूले (सोने, चाँदी, फूल–पत्ती, फल आदि) भगवान के लिए बनाए जाते हैं। सम्पूर्ण प्रकृति भी नवीन दुलहन की भाँति सजी सँवरी मनोरम श्रंगार से पूर्ण चित्त को आकर्षित कर लेती है। सुन्दर व्यंजन एंव विशेषकर सेमई भी आज के दिन रसोई में तैयार की जाती है। सभी प्रेम के साथ उनका भरपूर आनन्द लेते हैं। वास्तव में तो भाई–भाई स्वजन कुटम्बों की एकता ही राज्य लक्ष्मी को लाती है और भ्रातृ विरोध ही राज्य लक्ष्मी को विदेशियों के हाथ में डाल देता है, यही शिक्षा हमें रक्षाबन्धन पर्व से प्राप्त होती है। जिस प्रकार भक्त प्रह्लाद, भक्त ध्रुवादि के लिए भगवान ने सब कुछ सहकर भी उनकी रक्षा की उसी प्रकार हर भाई को इस रक्षासूत्र के बन्धन को अपने जीवन में निभाना चाहिए उसकी मर्यादा का पालन करना चाहिए तभी रक्षाबन्धन का त्यौहार मूर्तिमान हो सकेगा। ❋❋❋

शेष पेज 9 से आगे.....

हो के कारण इस सोमवार की जो भी प्रयोग किया जाता है, वह अपने आप में सिद्धिदायक होता है। निम्न कार्यो के लिए और जीवन में सभी दृष्टियों से सफलता के लिये इस सोमवार को प्रयोग किया जाना चाहिए।

1. अखण्ड सौभाग्य प्राप्ति एवं पति या पत्नी की पूर्ण आयु के लिये।
2. संतान प्राप्ति एवं पुत्र संतान के लिये।
3. संतान की सुरक्षा, उनकी, उनकी सफलता एवं पुत्र की उन्नति के लिये।
4. कन्या के शीघ्र विवाह और उसके योग्य वर प्राप्ति के लिये।
5. प्रत्येक प्रकार की मनोकामना पूर्ति के लिये।
6. अकाल मृत्यु निवारण तथा घर में पूर्ण सुख शांति के लिये।
7. आकस्मिक धन प्राप्ति एवं कुबेरवत् समृद्धि के लिये।
8. पूर्ण सौन्दर्य एवं यौवन प्राप्ति के लिये।

4. चौथा सोवमार:–दिनांक 19:08:2013 को श्रावण का चौथा सोमवार है। श्रावण माह का यह चौथा सोमवार और अन्तिम सोमवार भी अति महत्वपूर्ण है। सिद्धियां प्राप्त करने की दृष्टि से यह अति महत्वपूर्ण दिवस है। इस सोमवार को तो प्रयोग करना समस्त बाधाओं को मिटाकर, एकछत्र सफलता पाना है।

निम्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इस सोमवार का प्रयोग किया जा सकता है–

1. शत्रुओं के नाश के लिए।
2. शत्रुओं पर हावी होने व शत्रुओं को परास्त करने के लिए।
3. मुकदमें में पूर्ण सफलता प्राप्ति के लिये शीघ्रातिशीघ्र फैसले के लिये।
4. किसी भी प्रकार की राज्य बाधा, राज्य संकट आदि की समाप्ति के लिये।
5. भविष्य में किसी भी प्रकार की अड़चन, बाधा अपमान भय आदि की निवृत्ति के लिए।
6. एक्सीडेन्ट, एवं अकाल मृत्यु निवारण के लिए।
7. छोटे बालकों के स्वास्थ्य एवं आयु के लिए।
8. पूर्ण रोग मुक्ति एवं पारिवारिक सुख समृद्धि के लिए।
9. बुढ़ापा रोकने एवं अकाल मृत्यु की समाप्त करने के लिए।

वस्तुतः ये चारों सोमवार भगवान शिव की साधना से संबंधित है और शिव साधना से संबंधित है और शिव साधना के द्वारा ही विशेष साधना संपन्न कर मनोवांछित उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सकती है। ध्यान रखें, चूक ना जायें यह शुभ अवसर।

❋❋❋

शेष पेज 10 से आगे.....

पिता के बारे में जो अहम् बात बतलायी जा सकती है, वह यह कि जातक को अपने पिता सेसुख की प्राप्ति हो रही है या नहीं? उनसे विचारों का तालमेल रहता है या नहीं? अपने सामाजिक माहौल से वह खुश है या नहीं? पिता अपने समाज में कैसा स्थान रखते हैं? अपने पद प्रतिष्ठों के वातावरण से जातक संतुष्ट है या नहीं? वह आरामदायक जॉब में है या काफी जिम्मेदारी के बोझ को संभालना पड़ रहा है? इन जिम्मेदारियों को संभालने की क्षमता या रुचि के होने से पूरी स्थिति उसके नियंत्रण में हे या इन जिम्मेदारियों को संभालने की क्षमता या रुचि के न होने से उसे अवस रहा कठिनाइयों का सामना करने के लिए मजबूर होना पड़ता है? वह सामाजिक महत्व रखता है या नहीं? सामाजिक कार्यो में उसकी रुचि रहती है या नहीं? इन प्रश्नों का उत्तर ज्योतिष के माध्यम सेदे पाना काफी आसान है।

भारतीय वैदिक ज्योतिष के अनुसार सूर्य को समस्त ग्रहों का राजा माना जाता है और इसे समस्त प्राणी जगत को जीवन प्रदान करने वाली उर्जा का केंद्र भी माना जाता है। सूर्य को ज्योतिष की गणनाओं के लिए पुरुष ग्रह माना जाता है। प्रत्येक व्यक्ति की कुंडली में सूर्य का आम तौर पर उसके पिता का प्रतिनिधि माना जाता है जो उस व्यक्ति के इस प्राणी जगत में जन्म लेने का प्रत्यक्ष कारक होता है ठीक उसी प्रकार जैसे सूर्य को इस प्राणी जगत को चलाने वाले प्रत्यक्ष देवता का रुप माना जाता है। कुंडली में सूर्य को कुंडली धारक के पूर्वजों का प्रतिनिधी भी माना जाता है। क्योंकि वे कुंडली धारक के पिता के इस संसार में आने का प्रत्यक्ष कारक होते हैं। इस कारण से सूर्य पर किसी भी कुंडली में एक या एक से अधिक बुरे ग्रहों का प्रभाव हाने पर उस कुडली में पितृ दोष का निर्माण हो जाता है जो कुंडली धारक के जीवन में विभिन्न प्रकार की मुसीबतें तथा समस्याएं पैदा करने में सक्षम होता है।

ज्योतिष विज्ञान में सूर्य का विशेष महत्व है। सूर्य पूर्व दिशा का पुरुष, रक्त वर्ण, पित्त प्रकृति और क्रूर ग्रह है। सूर्य आत्मा, स्वभाव, आरोग्यता, राज्य और देवालय का सूचक तथा पितृ कारक है। सूर्य आत्मबल का , आत्मविश्वास का कारक है। सूर्य का नेत्र, कलेजा, मेरुदंड आदि पर विशेष प्रभाव पड़ता है इससे शारीरिक रोग, सिरदर्द, अपचन, क्षय, महाज्वर, अतिसार, नेत्र विकार, उदासीनता, खेद, अपमान एवं कलह आदि का विचार किया जाता है। ज्योतिष में सूर्यदेव आत्मा कारक और पितृ कारक है, पुत्र राज्य सम्मान पद भाई शक्ति दायीं आंख चिकित्सा पितरों की आत्मा शिव और राजनीति का कारक मेष राशि में उच्च का एवं तुला में नीच का माना जाता है, चन्द्रमा देव ग्रह हे, तथा सूर्य का मित्र हे, मंगल भी सूर्य का मित्र है, गुरु सूर्य का परम मित्र है, बुध सूर्य के आसपास रहता है, और सूर्य का मित्र है, शनि सूर्य पुत्र हे लेकिन सूर्य का शत्रु है, कारण सूर्य आत्मा है और आत्मा का कोई कार्य नहीं होता है, जबकि शनि कर्म का कारक है, शुक्र का सूर्य के साथ संयोग गहीं हो पाता है, सूर्य गर्मी है और शुक्र रज है सूर्य की गर्मी से रज जल जाता है, और संतान होने की गुंजायस नहीं रहती हे, इसी लिये सूर्य का शत्रु है, राहु विष्णु का विराट रुप है, जिसके अन्दर सम्पूर्ण विश्व खत्म हो रहा है, राहु सूर्य और चन्द्र दोनों ही दुश्मन है, सूर्य के साथ

होने पर पिता और पुत्र के बीच धुंआ पैदा कर देता है, और एक दूसरे को समझ नहीं पाने के कारण दोनों ही एक दूसरे से दूर हो जाते है, केतु सूर्य का सम है, और इसे किसी प्रकार की शत्रु या मित्र भावना नहीं है सूर्य से सम्बन्धित व्यक्ति पिता चाचा पुत्र और ब्रह्मा विष्णु महेश आदि को जाना जाता है आत्मा राज्य यश पित्त दायीं आंख गुलाबी रंग और तेज का कारक है।

बारह राशियों में से कुछ राशियों में सूर्य का बल सामान्य ये कम हो जाता है तथा यह बल सूर्य के तुला राशि में स्थित होने पर सबसे कम हो जाता है। इसी कारण सूर्य को तुला राशि में स्थित होने पर नीच माना जाता है क्यों तुला राशि में स्थित होने पर सूर्य अत बलहीन हो जाते हैं। इसके अतिरिक्त सूर्य कुंडली में अपनी स्थिति के कारण तथा एक या एक से अधिक बुरे ग्रहों के प्रभाव में आने के कारण भी बलहीन हो जाते हैं तथा इनमें से अंतिम प्रकार की बलहीनता कुंडली धारक के लिए सबसे अधिक नुकसानदायक होती है। किसी कुंडली में यदि सूर्य तुला राशि में स्थित हों तथा तुला राशि में ही स्थित अशुभ शनि के प्रभावमें हों तो ऐसी हालत में सूर्य को भारी दोष लगता है क्योंकि तुला राशि में स्थित होने के कारण सूर्य पहले ही बलहीन हो जाते हैं तथा दूसरी तरफ तुला राशिमें स्थित होने पर शनि को सर्वाधिक बल प्राप्त होता है क्योंकि तुला राशि में स्थित शनि उच्च के हो जाते हैं। ऐसी हालत में पहले से ही बलहीन सूर्य पर पूर्ण रुप से बली शनि ग्रह का अशुभ प्रभाव सूर्य को बुरी तरह से दूषित तथा बलहीन कर देता है जिससे कुंडली में भयंकर पितृ दोष का निर्माण हो जाता है जिसके कारण कुंडली धारक के जीवन में सूर्य के प्रतिनिधित्व में आने वाले सामान्य तथा विशेष, सभी क्षेत्रों पर दुष्प्रभाव पड़ता है। इस लिए किसी भी व्यक्ति की कुंडली का अध्ययन करते समय कुंडली में सूर्य की स्थिति, बल तथा कुंडली के दूसरे शुभ तथ अशुभ ग्रहों के सूर्य पर प्रभाव को ध्यानपूर्वक देखना अति आवश्यक है।

पिता तथा पूर्वजों के अतिरिक्त सूर्य को राजाओं, प्रदेशों तथा देशों के प्रमुख, उच्च पदों पर आसीन सरकारी अधिकारियों, सरकार, ताकतवर राजनीतिज्ञों तथा पुलिस अधिकारीयों, चिकित्सकों तथा ऐसे कई अन्य व्यक्तियों और संस्थाओं का प्रतिनिधि भी माना जाता है। सूर्य को प्रत्येक व्यक्ति की आत्मा का, जीवन दायिनी शक्ति का, इच्छा शक्ति का, रोगों से लड़े की शक्ति का, आँखों की रोशनी का, संतान पैदा करने की शक्ति का तथा विशेष रुप से नर संतान पैदा करने की शक्ति का, नेतृत्व करने की क्षमता का तथा अधिकार एवम् नियंत्रण की शक्ति का प्रतीक भी माना जाता है।

सूर्य का माह में अपनी राशि बदलता है। सूर्य जब भी किसी भी राशि में प्रवेश करता है तो उस दिन को राशि की संक्राति कहते हैं। मकर सक्रांति को सूर्य के संक्रमण काल का त्योहार भी माना जाता है। सूर्य के एक जगह से दूसरी जगह जाने अथवा एक–दूसरे का मिलना ही संक्रांति होती है। सूर्य जब धनु राशि से मकर पर पहुंचता है तो मकर संक्रांति मनाते हैं। वृषभ, सिंह वृश्चिक, कुंभ, संक्रांति विष्णुपद संज्ञक है। मिथुन, कन्या, धनु, मीन संक्रांति को षडशीति संज्ञक कहा है। मेष, तुला को विषुव संक्राति संज्ञक तथा कर्क, मकर संक्रांति को अय संज्ञक कहा गया है।

कुंडली में सूर्य के बलवान होने पर कुंडली धारक सामान्यतया समाज में विशेष प्रभाव रखने वाला होता है तथा अपनी संवेदनाओं और भावनाओं पर भली भांति अंकुश लगाने में सक्षम होता है। इस प्रकार के लोग आम तौर पर अपने जीवन के अधिकतर निर्णय तथ्यों के आधार पर ही लेते है न कि भावनाओं के आधार पर ऐसे लोग सामान्यतया अपने निर्णय पर अडिग रहते हैं तथा इस कारण इनके आस–पास के लोग इन्हें कई बार अभिमानी भी समक्ष लेते हैं जो कि कई बार हो भी सकते है किन्तु अधि..कतर मौकों पर ऐसे लोग तर्क के आधार पर लिए गए सही निर्णय की पालन ही कर रहे होते हैं तथा इनके अधिक कठोर लगने के कारण इनके आस–पास के लोग इन्हें अभिमानी समझ लेते हैं। अपने इन गुणों के कारण ऐसे लोगों में बहुत अच्छे नेता, राजा तथा न्यायाधीश बनने की क्षमता होती है।

मानव जीवन को प्रभावित करने वाला दसवाँ संदर्भ पिता, समाज, रोजगार, पद और प्रतिष्ठा से संबंधित मामला होता है। किन्तु इस भाव से पिता के बारे में कोई व्यक्तिगत जानकारी हीं दी जा सकती है। पिता कितने भाई–बहन है या उनकी कद काठी क्या है या वे किस प्रकार के रोजगार में हैं, कितने दिनों तक जीवित रहेंगे, इन सब बातों की सूचना किसी भी ज्योतिषी के द्वारा नहीं दी जा सकती है। जातक खुद किस प्रकार के रोजगार में है, इसके बारे में भी बतला पाना मुश्किल है क्योंकि प्राचीन काल में भौगोलिक क्षेत्र के हिसाब से अलग–अलग रोजगार के साधन होते थे, समुद्रतटीय प्रदेशों के लोग मछली पकड़ने में निपुण होते हैं, तो कृषि, प्रधान प्रदेशों के लोग खेती करने में। जंगली क्षेत्रों में रहने वाले आदिवासी लोग शिकार करने में निपुण होते हैं, तो पर्वतीय प्रदेशों के लोग चढ़ाई करने में। क्या अलग–अलग प्रदेशों में लोगों का जन्म खास समयांतराल में होता है? नहीं। आज रोजगार के क्षेत्रों की गिनती नहीं की सकती है, क्योंकि इनकी संख्या काफी बढ़ गयी है, जबकि किसी व्यक्ति को प्रभावित करने वाले ग्रह केवल सात ही हैं।व्यक्ति के शरीर में सूर्य पित्त प्रवृत्ति का प्रतिनिधित्व करते है क्योंकि सूर्य ग्रह के स्वभाव तथा अधिकार में अग्नि तत्व होता है। बारह राशियों में सूर्य अगिन राशियों (मेश, सिंह तथा धनु) में स्थित होकर विशेष रुप से बलवान हो जाते हैं तथा मेश राशि में स्थित होने से सूर्य को सर्वाधिक बल प्राप्त होता है और इसी कारण इस राशि में सूर्य को उच्च का माना जाता है। मेष राशि के अतिरिक्त सूर्य सिंह राशि में स्थित होकर भी बली हो जाते हैं जो कि सूर्य की अपनी राशि है तथा इसके अतिरिक्त सूर्य धनु राशि में भी बलवान होते हैं जिसके स्वामी गुरु हैं। जिन व्यक्तियों की जन्म कुंडली में सूर्य बलवान तथा किसी भी बुरे ग्रह के प्रभाव से रहित होकर स्थित होते हैं ऐसे कुंडली धारक आम तौर पर जीवन भर स्वस्थ रहते हैं क्योंकि सूर्य को सीधे तौर पर व्यक्ति के निरोग रहने की क्षमता का प्रतीक माना जाता है। कुंडली में सूर्य बलवान होने से कुंडली धारक की रोग निरोधक क्षमता सामान्य से अधिक होती है तथा इसी कारण उसे आसानी से कोई रोग परेशान नहीं कर पाता। ऐसे व्यक्तियों का हृदय बहुत अच्छी तरह से काम करता है जिससे इनके शरीर में रक्त का संचार बड़े सुचारु रुप से होता है। ऐसे लोग शारीरिक तौर पर बहुत चुस्त–दुरुस्त होते हैं तथा आम तौर पर इनके शरीर का वजन भी सामान्य से बहुत अधिक या बहुत कम नहीं होता हालांकि इनमें से कुछ तथ्य कुंडली में दूसरे ग्रहों की शुभ या अशुभ स्थिति के साथ बदल भी सकते हैं।

❋❋❋

पूजा के यंत्र-तंत्र-रुद्राक्ष सामिग्री

पूजा की सामिग्री

मालाऐं (रूद्राक्ष, स्फेटिक)

रूद्राक्ष माला
रूद्राक्ष माला (मध्यम)
रूद्राक्ष माला छोटे दाने
रूद्राक्ष- स्फटिक माला
स्फटिक माला छोटी
स्फटिक माला बड़ी
लाल चंदन माला, हल्दी की माला
कमल गट्टे की माला

स्फटिक सामग्री

स्फटिक श्री यंत्र
स्फटिक लक्ष्मी, स्फटिक गणेश
स्फटिक शिव लिंग
स्फटिक बॉल बड़ा
स्फटिक बॉल छोटी

मिश्रित सामिग्री

नवरत्न ब्रेसलेट
नवरत्न ब्रेसलेट (मध्यम)
नवरत्न अंगूठी
काले घोड़े की नाल असली
काले घोड़े की नाल का छल्ला
श्वेतार्क गणपति
इंद्रजाल, बृहमजाल
गोमती चक्र, नाभि चक्र

शंख

दक्षिणावर्ती शंख (स्पेशल)
दक्षिणावर्ती शंख मध्यम
गणेश शंख एवं लक्ष्मी शंख

सभी तरह के लॉकेट (चांदी में)

सिद्ध सर्वकार्य भौतिक सुख कवच
सिद्ध विघ्न विनाशक रक्षा कवच
सिद्ध महामृत्युंजय -शत्रु नाशक कवच
सिद्ध रत्नजडित कालसर्प लॉकेट
सिद्ध कालसर्प लॉकेट चांदी में
सिद्ध सरस्वती यंत्र-रक्षा कवच
सिद्ध श्री यंत्र-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-रक्षा कवच सहित
सिद्ध शत्रु नाशक-टोटके नाशक
सिद्ध टोटके नाशक-रक्षा कवच

रूद्राक्ष

सिद्धएकमुखी (गोल दाना)
सिद्धएकमुखी (काजू दाना)
सिद्ध तृतीय नेत्र रूद्राक्ष
सिद्ध गौरी शंकर रूद्राक्ष
सिद्ध गर्भ गौरी रूद्राक्ष
सिद्ध दो मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध तीन मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध चार मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध पांच मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध छः मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध सात मुखी रूद्राक्ष
सिद्ध आठ मुखी रूद्राक्ष

पारद सामग्री

पारद शिव लिंग, पारद श्री यंत्र

पिरामिड

पिरामिड (पीतल)
पिरामिड छोटे (पीतल)
कार पिरामिड
स्टडी टेबल पिरामिड

तांत्रिक वस्तुयें

तांत्रिक नारियल
तांत्रिक पत्ता सुपाड़ी
गऊ लोचन
एकाक्षी नारियल

फेंगशुई

मेगनेट ब्रासलेट, समृद्धि पेड़
लाफिंग बुद्धा, क्रिसटल बॉल
ग्लोब, पिरामिड शुभ-लाभ
लुक, फुक, साहू
लवबर्ड, कछुआ
तीन टांग का मेंढ़क

भविष्य दर्शन के नाम से ड्राफ्ट या मनीआर्डर भेजकर प्राप्त कर सकते हैं।
500 रूपये या अधिक का सामान वी.पी. पी. द्वारा भी मंगा सकते हैं।

सभी प्रकार के सिद्ध यंत्र, सिद्ध तंत्र सामग्री, असली रत्न की अंगूठी, रुद्राक्ष, रत्न व स्फटिक मालायें आदि उपलब्ध करायी जाती हैं

भविष्य दर्शन®
ज्योतिष, वास्तु शिक्षण संस्थान

भगवती कॉम्प्लैक्स, शाह सिनेमा के सामने, आगरा फोन : 0562-2856666, 2525262